

२५

अ

- अमर आमा
गो लागा दुष्ट
अज जाह राग
आमाला तेरा जीवा
न याता दू पुर्व
आदर सतगुरा
उत्तरत लाम —
आपना सुप ५६ चाँच
आपना हृषि दु
उपनी दृषि जा
आणी दृषि अंत
अवसर कार
आ वारा भरया
आ उल लै नोते
आगा आला इताधा वा

ठा

- ३१/८१। रम का
३१/८१। मै अटा
३१/८१। लिसे वा
आवाज दृषि का
आवा वा दीरा वा
३१/८१। वा ३१/८१
३१/८१-८ चाँत दृषि

१.

२.

३.

४.

५.

६.

७.

८.

९.

१०.

११.

१२.

१३.

१४.

१५.

१६.

१७.

१८.

१९.

२०.

२१.

२२.

२३.

२४.

२५.

२६.

२७.

२८.

२९.

३०.

३१.

३२.

३३.

३४.

- दृषि २१। दृषि
ज्ञानर वादती दृषि
दृषि दृषि - दृषि दृषि
कन्नाया वा वादती
दृषि लादर दृषि
छरा दृषि दृषि
दृषि उपर दृषि
छरा उपर दृषि
दृषि उपर दृषि
उपर उपर दृषि

३.

- उभन चल का
उधत जुरुतया

४.

- वा वडी आधी
वा हस्त वा दृषि
वा दृषि दृषि
आ दृषि जीवन
ओ दृषि जी
मा दृषि वातगुरु
आवा अक्षर वीता

35. जुध भैझ असगाड
 36. नेगा जैन सुन्दर
 37. बाल बदला र
 38. जुध लोना र
 39. बाल विमास
 40. जुध र बिगडगा
 41. बालगुरा र विपा
 42. बालगा र वाला
 43. जुध विश्वाली वार
 44. बाल वाले दगा
 45. बालमी राला
 262. जुध उडी बलगा
 263. बाल र विलगा
 282. जुल्हा रा राला

रव

द्य द्य

56. चाल अम्ब द्य
 281. दंड रे जम
 दूध रे पर कवाल

46. चुक रुम जा
 47. चुक के अमाल
 48. गोलंद के रुम
 49. चुक मुख लग
 50. चुम हाँड गा
 51. चुक के लाल
 52. चुक ले लेया
 53. चाली प्रेत वाला
 54. चुक देव गो
 55. चुर देव जो
 56. चुर सहा प्रात
 57. चुर हिन राना तो
 58. जो चाल अगम
 59. जो चाली बी
 60. जो जीर लालो
 61. जो जगत रहा
 62. जो जार कुम
 63. जो जार तो तार
 64. जो जारी नी
 65. जो जारी जारी
 66. जो जारी जारी
 67. जो जारी जारी
 68. जो जारी जारी
 69. जो जारी जारी

70. जीवन लो दारारा
 जीवन ली डीर
 71. जाइरक हुक्य जे
 72. जो जीरी चुम
 जाल उमारी
 73. जो जीरी राम
 74. जो जीरी राम
 75. जो जीरी राम
 76. जो जीरी राम
 77. जो जीरी राम
 78. जो जीरी राम
 79. जो जीरी राम
 80. जो जीरी राम
 81. जो जीरी राम
 82. जो जीरी राम
 83. जो जीरी राम
 84. जो जीरी राम
 85. जो जीरी राम
 86. जो जीरी राम
 87. जो जीरी राम
 88. जो जीरी राम

89. दूर राम यर
 90. दूर रा रे रे
 91. दूर रा रे रे
 92. दूर रे रे रे
 93. दूरी विवरा
 94. दूरी विवरा
 95. दूर रारायर 2/12/11
 96. दूरी विवरा 4/13
 97. दूरी विवरा रे
 98. दूरी राम रुहा
 99. दूरी राम रुहा
 100. दूरी राम रुहा
 101. दूरी राम रुहा
 102. दूरी राम रुहा
 103. दूरी राम रुहा
 104. दूरी राम रुहा
 105. दूरी राम रुहा
 106. दूरी राम रुहा
 107. दूरी राम रुहा
 264. दूरी रुग रुहा
 265. दूरी रुहा रुहा
 266. दूरी रुहा रुहा
 267. दूरी रुहा रुहा
 268. दूरी रुहा रुहा

108.	देरवां डोहो
109.	देरवो राहो
110.	देरवार दो मध्य
111.	दे गालः पाकार्ह
112.	देरवा दो दीदा
113.	देरवा दुनार्हा
114.	देरवा लाली
115.	देरवा दु १०००
116.	दुर्वाला दु अचा
117.	देरवा १०००
118.	देरवा दो लाल्हर
119.	देरवा दुर्ल दो
१११	दिलदे चिरासन उरों कीन
१२०.	ना पूदा दो
१२१.	ना मैं मन
१२२.	नो दो दो
१२३.	नाम जपन करो
१२४.	नारायण जिसो
१२५.	ना जाना राजा
१२६.	ना रख बाजा
१२७.	न दूर भूलो
१२८.	नेला विल बल
१२९.	निर्जिन रंगी पदरिया दे
१३०.	नातुकमें ना गुजरां तुदो

130.	प्रसी तु प्रभु
131.	प्रसी लल दो
132.	प्रसी असुर
133.	प्रसी दे सुन
134.	प्रसी नदी गार्ह
135.	प्रसी विद्युत
136.	प्रसी वार्षि दो
137.	प्रसी वार्षि दो
138.	प्रसी वार्षि दो
139.	प्रसी वार्षि दो
140.	प्रसी वार्षि दो
141.	प्रसी वार्षि दो
142.	प्रसी वार्षि दो
143.	प्रसी वार्षि दो
144.	प्रसी वार्षि दो
145.	प्रसी वार्षि दो
146.	प्रसी वार्षि दो
147.	प्रसी वार्षि दो
148.	प्रसी वार्षि दो
149.	प्रसी वार्षि दो
150.	प्रसी वार्षि दो
151.	प्रसी वार्षि दो
152.	प्रसी वार्षि दो
153.	प्रसी वार्षि दो

154.	रोम रस वरसे
155.	रमता राम रगो
156.	रिगार्ह वरगे वरगे
157.	रूपा अवा
158.	रामा रामा दी चामा
159.	रामा रामा वरद्वा
160.	रामा रामा वारद्वा
161.	रामा रामा वारद्वा
162.	रामा रामा वारद्वा
163.	रामा रामा वारद्वा
164.	रामा रामा वारद्वा
165.	रामा रामा वारद्वा
166.	रामा रामा वारद्वा
167.	रामा रामा वारद्वा
168.	रामा रामा वारद्वा
169.	रामा रामा वारद्वा
170.	रामा रामा वारद्वा
171.	रामा रामा वारद्वा
172.	रामा रामा वारद्वा
173.	रामा रामा वारद्वा
174.	रामा रामा वारद्वा
175.	रामा रामा वारद्वा
176.	रामा रामा वारद्वा
177.	रामा रामा वारद्वा
178.	रामा रामा वारद्वा
179.	रामा रामा वारद्वा
180.	रामा रामा वारद्वा
181.	रामा रामा वारद्वा
182.	रामा रामा वारद्वा
183.	रामा रामा वारद्वा
184.	रामा रामा वारद्वा
185.	रामा रामा वारद्वा
186.	रामा रामा वारद्वा
187.	रामा रामा वारद्वा
188.	रामा रामा वारद्वा
189.	रामा रामा वारद्वा
190.	रामा रामा वारद्वा
191.	रामा रामा वारद्वा
192.	रामा रामा वारद्वा
193.	रामा रामा वारद्वा
194.	रामा रामा वारद्वा
195.	रामा रामा वारद्वा
196.	रामा रामा वारद्वा
197.	रामा रामा वारद्वा
198.	रामा रामा वारद्वा
199.	रामा रामा वारद्वा
200.	रामा रामा वारद्वा
201.	रामा रामा वारद्वा
202.	रामा रामा वारद्वा
203.	रामा रामा वारद्वा
204.	रामा रामा वारद्वा
205.	रामा रामा वारद्वा
206.	रामा रामा वारद्वा
207.	रामा रामा वारद्वा
208.	रामा रामा वारद्वा
209.	रामा रामा वारद्वा
210.	रामा रामा वारद्वा
211.	रामा रामा वारद्वा
212.	रामा रामा वारद्वा
213.	रामा रामा वारद्वा
214.	रामा रामा वारद्वा
215.	रामा रामा वारद्वा
216.	रामा रामा वारद्वा
217.	रामा रामा वारद्वा
218.	रामा रामा वारद्वा
219.	रामा रामा वारद्वा
220.	रामा रामा वारद्वा
221.	रामा रामा वारद्वा
222.	रामा रामा वारद्वा
223.	रामा रामा वारद्वा
224.	रामा रामा वारद्वा
225.	रामा रामा वारद्वा
226.	रामा रामा वारद्वा
227.	रामा रामा वारद्वा
228.	रामा रामा वारद्वा
229.	रामा रामा वारद्वा
230.	रामा रामा वारद्वा
231.	रामा रामा वारद्वा
232.	रामा रामा वारद्वा
233.	रामा रामा वारद्वा

234.	साँड तेरी पाद
235.	सत्त शुभ को
236.	साथी रघुनाथ
237.	साथ जिसके सत्तुम
238.	सत्संग जो आते
239.	सन्त जगत जे
240.	सत्तुम जे वसनो
241.	साता दे वसाते
242.	सन जो झौंदा
243.	संह - १०५१-२. जैरामां
244.	सत्तान की निर्मित गंगा

284 - भवासूक्ति ।
288 - अ दुर्लभा विच

54.	ਦੂਜੇ ਲੋਕਾਂ ਵਿਖੇ 153
155	ਗੁਰੂ ਪਾਤਾ ਹੈ 154
156	ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ 155
157.	ਭੈਟਾਗ ਜੇ ਗੁਰੂ ਪਾਤਾ 156
158	ਗੁਰੂ ਸਾਹਿਬ ਜੀ 157 ਗੁਰੂ ਪਾਤਾ 158
	ਮ
159	ਮਾਨਸ ਰਾਮ 159
160	ਮਨਾਤ ਮੁਖ ਗੁਰੂ 160
161	ਮਨਾਤ ਮੁਖ ਗੁਰੂ 161
	ਚ
162	ਚੁਪਾ ਚੁਪਾ ਕੁਪਾ 162
163	ਚੁਪਾ ਚੁਪਾ ਮੌਹਿਮੁਖੀ 163
164	ਚੁਪਾ ਚੁਪਾ ਚੁਪਾ 164
165	ਚੁਪਾ ਚੁਪਾ ਚੁਪਾ 165
166	ਚੁਪਾ ਚੁਪਾ ਚੁਪਾ 166
167	ਚੁਪਾ ਚੁਪਾ ਚੁਪਾ 167
168	ਚੁਪਾ ਚੁਪਾ ਚੁਪਾ 168
169	ਚੁਪਾ ਚੁਪਾ ਚੁਪਾ 169
170.	ਚੁਪਾ ਚੁਪਾ ਚੁਪਾ 170
171	ਚੁਪਾ ਚੁਪਾ ਚੁਪਾ 171
172	ਚੁਪਾ ਚੁਪਾ ਚੁਪਾ 172
173	ਚੁਪਾ ਚੁਪਾ ਚੁਪਾ ਚੁਪਾ 173
174	ਚੁਪਾ ਚੁਪਾ ਚੁਪਾ ਚੁਪਾ 174
175.	ਚੁਪਾ ਚੁਪਾ ਚੁਪਾ ਚੁਪਾ 175
176	ਚੁਪਾ ਚੁਪਾ ਚੁਪਾ 176
177.	ਚੁਪਾ ਚੁਪਾ ਚੁਪਾ ਚੁਪਾ 177
178.	ਚੁਪਾ ਚੁਪਾ ਚੁਪਾ ਚੁਪਾ 178
179.	ਚੁਪਾ ਚੁਪਾ ਚੁਪਾ ਚੁਪਾ 179
180.	ਚੁਪਾ ਚੁਪਾ ਚੁਪਾ ਚੁਪਾ 180

੨੧੭ | ਚੰਦ ਰਥ ਸੇਵਾ ਮੁਗਾ

२५०१८
३१२०८
५६८४११८
—

- ੴ

243. ਇਸ ਲਈ ਹੈ
ਦੁਜੇ ਗਿਦ੍ਧੇ

244. ਕੋਈ ਸੁਖ ਵਾ

245. ਕੋ ਜਾਰੀ ਨਾਹੀ

246. ਦੀਵੇ ਦੇ ਪੱਤ੍ਰ

247. ਏਗ਼ਰੇ ਸੁਖੀ

248. ਦੁਆਰਾ ਨੇਹੀ

249. ਦੁਰ ਪੜਾ ਸੁਖੀ

250. ਦੂਜੇ ਘਾਟੇ ਹੀ

251. ਦੂਜੇ ਰਾਮੇ ਗਾਹ

252. ਦੁਆਰਾ ਨੇਹੀ

253. ਦੁਜਾ ਨੇ ਨੇਹੀ

254. ਦੁਜਾ ਅਪਨੀ ਬੁਰੀ

255. ਦੁਜਾ ਬਚੁੜੀ

256. ਦੁਜਾ ਬੁਰੀ

257. ਦੁਆਰਾ ਨੇਹੀ

258. ਦੀਵੇ ਅੌਜ ਪੀਕਾਇ

259.

260. ਦੀਵੇ ਸੁਖੀ ਵਾ

१

६३०

1989

अमर आत्मा सच्चिदानन्द में हुं पिंडोहा।

३

ओरिवल विश्रव का जो पारगा तंग है
सभी प्राणियों का वाहो रहता है
वही आत्मा सच्चिदानन्द भी हुं शिवोहम् -

जिसे शस्त्र वाटे ना आज्ञि जलाए
जलाए ना पानी ना मृत्यु गिराए - वही आत्मा -

अजर और अमर जिस लो लेदो जो जाया
वही शान उज्जिति को होए जे सुना॥।।। तही -

अमर आत्मा है मरण शांत बनाया
सभी प्राणियों को जो भीतर सदाइया - वही -

है तारो सितारो में प्रकाश जिसका
है चान्दा व सुरज भी आमास्य जिसका - वही -

जो व्यापक है काण भी में है लास जिसका
नहीं तीन लालो में भी नाश जिसका - वही -

64

January
Wednesday

2.

1989

उरे लोगों तुम्हें क्या है, या वो जाने या मैं जानू
 - वो दिल माँड़ों तो हाजिर है
 - वो सिर माँड़ों तो बेसिर है
 - वो मुरव्व मोड़े तो काफिर हैं या वो
 - वो मेरी बगल घिप रहता
 - मैं उसका नाज सब सहता
 - वो दो बातें मुझे छहता या वो -
 - वो मेरे रखून का प्यासा
 - मैं उसके दर्द का मारा
 - दोनों का पथ है निशाला या वो -

3

अब जोहे राम भरोसा तेरा
 अब मोहे सत्गुरु सभरोसा तेरा

दीपक ज्ञान जगा धट अन्तर
 भिटा ज्ञान अन्पेरा
 निशा निशा दूर हुई जब
 उन्हों शानि सेवरा
 "अमर महारस नान लान कर
 गुर्जा हुआ गन मेरा

4

65

January
Thursday

1989

5

अजमोत्तु तेरा जीवन धूंही गवां रहा है
 किस और तेरी मंजिल किस और जा रहा है

सपनों को नीद में ही, यह रात ढल न जाए
 पल भर का क्या भरोसा, कहीं जा निकल न जाए
 गिनती की है ये सासे धुं ही लूटा रहा है

जाएगा जब यहाँ से कोई ना साथ देगा
 इस हाप जो दिया है उस हाप जा तू लेगा
 कर्मों की है ये रवेती फल आज पा रहा है

ममता के बन्धनों ने क्यों आज तुम्हें को चोरा
 सुख में सभी हैं साथी कोई नहीं है तेरा
 तेरा ही मोह तुम्ह को कब से रुला रहा है

जब तक है भेद मन में भगवान् रो जुदा है
 रवोलों जो दिल का दर्पण इस धर में ही रखदा है
 सुख रूप हो के भी तू दुर्वा आज पा रहा है
 अजमोत्तु तेरा - - -

6

January
Friday

12 ६-

1989

अ दाता तु पूर्ण घनी
 भाष्य से प्रीत तुग संग जनी
 ये जनी ही रहे और हरदग वेटे
 भीरव माँगू मैं तुम्ह से यही

मेरे दिल में तु ही तु बसा है
 मेरी आँखों में तु ही छिपा है
 तु हुआ है मेरा मैं हुआ हुंतेरा
 जाता तुक से जन्म का
 तार ढूटे जा हरगिज कामी

तेरी गीठी नजर जज मैं पाँकु
 दुनिधाँ के सारे गगा भूल जाँकु
 और आशा नहीं आगी लाशा नहीं
 तेरी कृपा की कृषि मैं चाहूँ
 जिस मैं काया गोरी गिन्दगी

दुनिधाँ जी काहे परताह तुल मैं
 लोई लेने गी तो कम्हू डुल मैं
 मेरा आधार तु मेरा संरगर तु
 तेरी प्रीति का ही दग उल्ल मैं
 रहे तमन्ना यही छेड़ी की

6

३५

January
Saturday

7

1989

अन्दर सतगुर्ज ढाकेरा अन्दर ज्योत जगवी
 अन्दर ज्योत जगदी कि निर्मल ज्योत जगदी

जेहडा ज्योत नू जगावे, पहले मन जपना समझावे
 पीछे भेद गुरा दा पावे अन्दर ज्योत जगदी

अन्दर ज्योत दे लालकोरे सुरज चमकान लाई हजारे
 जिसदा अन्त ना पाथा पार अन्दर ज्योत जगदी

..ती तु अन्दर पत्ते गाती, ज्योत गादी देनरात
 अन्दर लैठे सतगुर उगात, अन्दर गोता गादी

तेरे अन्दर गाल रखताना, ज्ञाजाई हुंतन देना हिंगला
 अन्दर अब तो पाले गाती अन्दर ज्योत जगदी

नी तु प्राय नाल पाले प्यार, तेरा हो गए लेना पार.
 तो तो गुणा है सर्सार, अन्दर द्योत गगदी

8 Sunday

9

January
Monday

7 दिन

अलख चाम की है तु धारा, जपते ओगर प्यारा

पाँच तत्व का देरवन हारा
तीन गुणों का साक्षी ख्यारा
चेतन है चमकारा

सत चित आजन्द तेरा रूप
तु ही साक्षी शहस्र स्नायण
तेरा तुम में साहू प्यारा -

जागो-५ करो विचार
उपजे ज्ञान की करो संभाल
रेसा अमोलक स्वांस न जाए

हरि ओम हरि ओम हरि ओम बोल
मन का मन्दिर जन में रवोल
जन मन्दिर में है भगवान
वो ही देरवो जो शहदावन

मन में तीर्थ गग्ना जगना
वही नहाए जो है सतकारा

शहस्र ज्ञान तेरे मन मन्दिर में
वही पाए जो शरण में आए

1989



8 दिन

January
Tuesday

1989

अपना रूप पहचान रेमन, दर्शन घे अभियान
पिण्ड शहस्राणु में रास तुम्हारी, काहे करताहो गुगान

तीन लोक में तुम्हरा वासा
काहे पिरत हो उदास
जान सके तो जान रे मन दर्शन घे भगतान

जैसे सिंह अंजा संग डोले
आप ना चेते भरम में भूले
जान रहियो अनजान रे मन

कस्तुरी वसे शुग के मांही
लन २ छुड़े शुद्धि जाई
होय रहियो हैरान रे मन

जिन प्रभु को निश्चय कर जान्यो
रमता राम सगल दाट मान्यो
सो सापु परतान रे मन

अब मेरी प्रीत शुरु संगलागी
सहल रैन भरम की भागी
आत्म में मस्तान रे मन

१०
३५

11
Wednesday

January

1989

अज्ञाक हैरान हूँ भगवन् तुम्हें कौसे रिश्चं
कोई वस्तु नहीं ऐसी जिसे सोचा जैलाऊ है

कौसे किस तरह आवाहन के तुम गौचूद हो हरजा
निरादर है लुलाने को अगर धाटी बजाऊँ, मैं

लगाना भोग है तुमको ये इक, अपमान करना है
स्थिता है जो सृष्टि को उसे कैसे रिताऊँ मैं

तुम्हीं गौचूद हो भ्रत में तुम्हीं व्यापक हो पूर्णों मैं
भला भगतान को भण पर कौसे चाठाऊँ, मैं

तुम्हारी गोत से रोशन है सूरज, और तोरे
महाअन्धेर है तुमको अगर दीपक, दिर्घाऊँ मैं

लोडे जादान है लोजो बनाते हैं तेरी भूरता,
बनाता है जो सृष्टि को उसे कैसे बनाऊँ, मैं

गुजाए हैं न सीना है न गर्दन है न रोशानी
है न है निर्लेप नारायण वाहा चन्दन लगाऊँ, मैं



१०
३५

12
Thursday

January

1989

अपनी कृपा जो आप दारे
सो सेतला लुला की मतते

गुरु को दारे आना ही लुहत है
बोल न लोल पद्यताना ही लुहत है
पश्चातप सो विष चुल गाए
गुरु लाली वां अचूता लो

जे मैं आरंवा ते मैं पावा
जे मैं विसरा ते गर जावा
सतगुरु समझतो हैं हमनो
हन की जित इनायत लो

बाहर रोन ध्यान रस्तान
भीतर व्यापे लोभ रस्तान
मिथ्या हैं छस जग तो जाया
सच्ची रोन तो टोलता लो

अपने को जो जाने जोचा
सोई गानीधो सब्र सो झोचा
मैं भर कार रखूद रहूदा हो गजा
रनुद की रोज द्विनादता लो

बुला मार्ग जिसने लताया
ऐसा सतगुरु विरता पाया
शीशा चढ़े जल गूरु रसरों में
फिर १० बीं दुर्दरत लो

उठन कैठा सोता जागत
जो जागत है सो लुर पावत
बया तेरा है काम जरूरी, दुर्द नहीं तेरा काम जरूरी
रोन की उस्तन जसुरान है

13

January
Friday

11 " ८० "

८०

1989

अनादि हूँ बै अन्त हूँ मैं भै रुदको
हूँ पहचान लिया

हूँ खल सदा नेजोड़ हूँ नहीं दूजा कोई धहरान लिया

मैं राजाओं का राजा रहा, बनता ही रह उनिहाँ में ग्रन्थ
हो कर मैं माया पति हरदम, करता ही रहा माया को सत्ताम
सत रूप को अपने भूल के, मानव रूप रो अपने गुणान
ये अपने

मेरा जन्म नहीं मेरा मरण नहीं, मेरी सुबह नहीं मेरी शाम
मेरा रंग रूप आकार नहीं, निशकार हूँ मेरा नाम नहीं
हूँ विशाल मैं आँख और सा, गुरु से मैं भै रुदरान लिया

मैं शान्त हूँ मैं शुभिता, आनन्दिता, भी हैं आनन्द हूँ
मैं शुगत भी हूँ मैं हूँ शुभिता, हूँ तृष्णा स्वर्ग में हूँ
सत रूप को अपने जान के नाम उसी बो भगवान लिया

मैं दुष्टा रहा हैं दुष्टा बना, मेरे जैत देरवे सत ही सत
सपना था जगत सपना ही रहा, चलता रही सपना मैं हूँ
जागृत
मैं ओम हूँ सब मुझ मैं ओम, मैं न रघुओं रामान विला

हर रूप रंग मैं हूँ बै बेसा, देरवे जो नजर मैं ही हरसु
हर फिल मैं छार ती मैं ही रहा, हर फूल मैं ही रुद्र बू
सत रूप मैं बैठ के डोलू मैं नग को सत रूप से रक्षण
लिया

आनन्दिता भी मैं आनन्द हूँ मैं शुभ भी हूँ तो हूँ शुभि
मैं शान्त सदा मैं शान्ति हूँ मैं तृष्णा भी हूँ मैं ही तृष्णि
सत रूप को अपने मान के दूजा नाम उसे भा लिया

12 ८०

January
Saturday

1989

आत्मरस के तीने वाले, रस तो पिलादे
शह जान से मस्त बना दे

भेद भ्रम मेरा रहे न कोई
दुख सुरक्षा गताला व्यापे न कोई
हैसी कोई शुभिता बता दे

कोन हूँ मैं और कहा से आई
किसने सारी सूष्टि रचाई
थाही तो मेरा भ्रम मिटा दे

दहस ही ब्रह्म हर गगह इनमाया
ब्रह्म दिना दृष्टव्य नजर न आया
हैसा ब्रह्म रूप मोहे बना दे

स्वपन सुखोप्ती को देरवन हारा
जागृत का तुमने किया पसारा
हैसी अरबण दृति बना दे

चुनने से मेरा कुप्त नहीं बनता
पढ़ने से मेरा दृष्टव्य नहीं बनता
दहस ही श्राद्ध जै गोता तना दे

16

January
Monday

1989

आत्मा में ज़दा रहता परगात्मा
कोई जाने न जाने तो मैं क्या करूँ
जरैन्द्र में साकार है वो प्रभु
कोई माने न गाने तो मैं क्या करूँ

एक आहंकार का बीच तर्दा पड़ा
मोहु का थे अंधेरा है चारों तरफ
बिन गुल के कभी बान होता नहीं
कोई जाने न जाने तो मैं क्या करूँ

हर गुल में हरलालो गें है उसकी गलक
है उसी को सहोरे थे पृथ्वी फलक
जड़ व चेतन में है उसकी कारीगरी
कोई जाने न - - - -

ज्ञान का तत्व मिलता है सत्संग से
सच्चा सुख प्राप्त होता है गुरुदेव
सत्गुरु की गहिंगा है सबसे बड़ी
कोई जाने न जाने - - - -

14 द्वेष

1989

January
Tuesday

17

आत्म किस तरा नान साही कौन कहाएगा
साही कौन कहाएगा जो गन तरा गन मिटाएगा

देही देख ज भूलो भाई देही तर्ग धर्म से पाई
भूख प्पास वा भान पापी पुन्नी कहाएगा

देरते सुन्ने सुन्धे और बोले दिल ला दुख सुख चित
अहं कुमा इन्सान जन्मे भरतो उगरणा

सत आत्म है चेतन है साही
सुरव वा रागर वह बटवासी
द्वाहुन कुमा बास भान हृद से लेहद पाएगा

गुण अवगुण जिस तार प्रवादो
इन्द्रुल इन्द्र जिस तार से आसे
तिस का करो च्छान खुद लेखुद हो जाएगा

समर्पि गुरु का लोध सुनाया
परम आनन्द अपानो मैं पाया
जलसा कुड़ा जहाज शुग रहज समाएगा

15 अप्रैल १९८९

18

January
Wednesday

1989

आवाज दे के प्रभु न खुलाओ
हैं नजदीक नजरों से पर्दा हूँताओ

हैं जर्रेश में वो ही समाया
मगर वो किसी की न दृष्टि में आया
वो आनन्द दाता है आनन्द पाऊ

नहीं नस व नोडी के बन्धन में आता
नहीं जन्म पाता नहीं दुरव उठाता
अगर मिलना पाहो तो गुरु शरण आओ

हैं अपने ही अन्दर कहाँ, ढूँढ़ते हो
जमी पर हैं कमों आसमाँ ढूँढ़ते हो
सरे आम देखे जो नजरे भुकाओ

न मन्दिर में पाया ज मस्जिद में पाया
है कण में व्यापक सभी में समाप्ता
अन्दर में है व्यापक अन्दर में ही पाऊ

16 अप्रैल

३

January
Thursday

19

1989

आत्म का दीदार कर मन आत्मकादीद

नित अविजासी आत्म जानो
पूर्ण क्रस्त परमात्म जानो
भूठा जगत् अनात्म जानो
भट ही करो विचार

भूठेजग से करो विजारा
सतगुरु सत्त्वन का व्वन प्यारा
ज्ञान सुनो कर आत्म प्यारा
त्यागो गन उन्हुंवार

पाँच कोष ता पर्दा हृष्टा के
अन्दर देखो स्थान लगाके
अनुभव अवर्त्ता आत्म प्यारा
सत चित उननन्द सार

कहे प्रेमी गुरु शब्द विचारो
लखना से निज रूप पहचनो
हैत भ्रग को तुरन्त निवारो
पाऊ गोदा धार

17 फ़र्ड

20

January
Friday

1989

आत्म के साज पर जो हिंडी गुनती की गेतान
शरणागति के साना दूने कर दिया कमाह
जोलो साब गिल दें हरि उग्रोग सेबोलो हरिओम

नग में नहीं है माया अपने नन में भी माया
इस माया वो है तजे कैसे मार भग्नाया
पिर मन ही मन में शहन का स्नासन दिखाया
में कैसे करूँ शुक्रिया तेरा ओ बेगिसाल

ना देरवा द्यो द्यो द्यो और लड़ा भी न देरवा
देरवा हैं जो देरवा वस आप ही देरवा
भी वारी जाऊँ देरवा तेरा सूप अनोखा
सब वो गले लगाया तेरा हृदय है विसाल

भद्रा वा पात्रत्वे के तेरे दर दो जो आया
उसको ही दूने शान वा अमृत है गिलाया
चौरासी उस वी काट जीवन गुवत बनाया
दुःखा वो देहाप्यास उसवा वायग की गिसहा

18 फ़र्ड

21

January
Saturday

1989

आनन्द स्त्रोत लह रहा है परत् उद्धास है
अचरज ये जल गें रह के भी मध्यली को प्यास है

पूलों में जो सुवास इर्वं में गिठास है
भगवान वा तो विश्व के कण २ में वास है

कुछ तो समय निकाल आत्म शुद्धि की लिए
मानुष जन्म वा उद्देश्य, ना कोवल विलास है

रुद्र शान चह्नु रकोल तो तु देरवा तो सही
जिसको तु दुःखता वो सदा तेरे पास है

आनन्द स्त्रोत वो ना पा सकेगा तब तलक
जब तलक तु मन और इन्द्रियों का दास है

22 Sunday

23

January
Monday

19 . ३४

1989

इक राम के दो - २ रूप पिले
 इक राम गुरु इक रमेया
 जिसे देख के जन काकसल रिले
 इक राम गुरु इक रमेया

इक स्थियों से चुपचाप रवड़ा
 इक मीठे बोल सुनाता है
 सतगुरु बिन इस की कदर नहीं
 सतगुरु बिन नजर न आता है

अबतार मेरा स्फुरण दीपता है
 सतगुरु मेरी इक जगाति है,
 दोनों के बिना ना कामचले
 दोनों की ज़स्तरत होती है,

ये राम नजर तब आते हैं
 जब नजर इलाही मिलती है
 जो नजर के परदे रखेल सके,
 इस दर के दवाई मिलती है

20 . ३५

January
Tuesday

24

1989

ईश्वर की भक्ति को दिल से न पुदाकरा
 जो वचन किया उससे वायदे को अदा करना

जब मात गर्भ अन्दर तू उल्टा छाटका था—
 तब जान तेरी छो भी जाने वज रवतरा था—
 जिसने जन्म दिया तुम्ह को पिल उसधे पिंदाकरना

ये नृष्णा का कासंग तेरा हरदम रवाली है—
 तू भूठी आशा के द्वारे का सवाली है—
 जो सब वज दाता है दिल उसधे पिंदाकरना

क्युं भूल गए प्रभु को दुनियाँ का घन्धा है—
 ईश्वर के नाम बिना ये बन्धा गन्धा है—
 निष्काम करना ना पाप अदा करना

इली पिला दे मतगुरु गुरु दो बाजा - २
 नजरों मेरे दृपदा ये भर ते भूता मैरा भूता - २
 ① छम्हारा बता तुके दृपदा - २। बनकर ते दिना - २
 दुनियाँ का नाम नहीं है, याहु बोड़ दे जाना - २.

② मेरी हुंदगी भी है यूँ, मेरी लंदगी भी है यूँ,
 करो ज़दगी के भालक, भूता दूँ यौँ आँखाना - २

③ दूरकर दूरव लाए, दुजे ना बोहि नहीं है,
 ते दर पे ओ गाँड़ है, बुझे बोड़ के ना रहा - २

④ छीती रसी छीती लीती, उल्लूते गाँड़ हो रहा - २.
 रहा है त्रिवर्ण कर्का, अमर्गो ने जूँ ठोकारा - २
 परवी ने दीनाना - १

25

January
Wednesday

1989

इस दिनियाँ जो कोई नहीं जो धिलकार्ड सुख के सापी अहुत गिलेपर दुख में कागज आए दुख सुख से परें सत्‌गुर हैं जो सदाई हेसराहा जो भी जाने शुरू को उसका सब दुख जाए

सो ही बड़ भागी जो सत्‌गुर पाए जो पुरा गुरपर तन मन धन की गगता जिटाए पुरा गुर पाए आत्मा में लाए

जिस के धिल जे ढेष नहीं है उच्च नीच तक आव नहीं है सोई दर्शन पाए

सुख दुख जो सम वनरको जाने ऐस ही सब से ऊचा जाने धीरज धिल में चारे

सत्‌गुर है दर भरा भण्डार कोई पावन वाला पाए गांज जगना भर वहाँ वहाँ कोई नहाज वाला नहाए गान प्याला अमृत दा कोई पीतल वाला पीए दरना पानी मेरे सत्‌गुर का कोई रवान वाला साए

बुरा ना सुनाता बुरा न कहता बुरा ना सोचता बुरा न देखता प्रभु को कोई पाए

८।

2.2

January
Thursday

26

1989

इन्साप, ना गन्धि है मे भा का घर है कहना है जो कह दे कुके किस बात का दुख है

मे रवीट तेरे मन में जो भगवान से है दूर है पांव तेरे पिर भी तू आजे से है गजबूर हिमत है तो आजा मे भलाई की इगर है

दुख दे के जो कुरियाँ से न इन्साप करेगा भगवान भी उसको न करी गाए तारेगा ये सोच ले हर बात की दाता को रवबर है

माफूस हो हार के तकदीर की बाजी प्यारा है तो बुझ जिसमें भगवान भी राजी दुख दर्द गिले जिसमें तो ही प्यार अमर है

है वास तेरे जिसकी अंमानत उसे दे दे निप्ति भी इन्सान मंहोद्यत उसे दे दे जिस दौरे चे सभी रक्त है छारे ये वो दर है

९।

23

27
January
Friday

1989

इकलहर उठी हैं अन्दर से रुद्धिवेष्वनरी हैं
बस मौज ही है आनन्द ही है, रस छल्फ पड़े अन्दरसे
रवकर से,

आश्चिक अपने पर ही होकर, अपने जो ही दूजाणगर
अपने पीढ़े दोडे अपने दीदे आगे
कैसी मौज मची है ओ गुम्फ में

लेकर कल्पना की सवारी, तीनों काल निश्चाईजाली
सब मैं ही तो हूं सब गुम्फ से ही हैं
कैसी व्यापकता है गुम्फ से

कली गम के कुए में गिरकर, द्रुता रेसोजाके उत्तरामर
कुछ ना आया ज्ञार कुछ ना पाया डगर
शिया रवुब मैं अपने भ्रम से

गुरुजान हृदय में धरकर, खुब गनन निया तादासे
सजाबेल ही है मैं बहस ही हूं ऐसी तहर चलाई लणगरमें

गुरुआद्धि सामने रख कर छुटे शास्त्रकर्म के मोहसे
खुब नाद लाजे रुब चाँटे बैजे जाजे पत्पर भी रखने से

मत पुष्पो ये मेरी उडाने गुरु जान की है ये उड़ाने
इन बहारों से सुन्दर इन सितारों से सुन्दर
कम्म जाच नहीं अन्दर से

मैं स्वयं का रस पीता हूं खुद ही से खुद रहता हूं
ऐसी लागी है लगन हुआ मैं हूं मगन
गिला गते हूं खद ही मैं खुद से

24
January
Saturday

28

1989

इस मैं मेरी नूं मार मैं विच बड़ी जुदाई

इस मैं नूं कर लो दूर अन्दर दी करो सफाई से

इस मैं ने भगड़ा पापा
झारे जग विच झोर मचाया
मेरे हाथ भी कृष्ण न आया
इस ने अन्धी मचाई से

तू करदा मैं ना मैं ना
इस जग दे विच सुख है ना
तूर्ध बारलो नेक कामाई
गुरु ने बात बताई से

तू छोड़ शरिका चारी
बन जाये जगत दा सांझू
तू दर २ ना भटकाई
गुरु ने साज बताई से

सब भाई बन्धु तेरे
चड़ चले ने साथी मेरे
चल देख गुरु दे डैरै
गुरु ने संगत लाई से

मैं तो जन्म २ दी भटकी
गुरु चूना तो मैं अटकी
सतगुरु ने पूर्ण बिया
गुरु ने बात बताई से

25

30

January
Monday

1989

इस जग विच विस दे गुण बाँवों
दो रगजा किसे ना दसिया जे
फिर २ के अब मैं हार गई
पूरे शुरु दी शारणी पड़िया ने

कोई कहता डाढ़ा नुत्र गा
कोई कहता विष्णु नुत्र रिना
कोई कहता शंकर कोत्र मना
दूरों दूर दी भाँवा दसिया ने

विचार की सेजा सोई मैं
तीनों की कर्त्ता होई मैं
कर्ता उकारी होई मैं
पूरे शुरु दी शारणी पड़िया ने

कि जाना कि तु बिंदा रु
पल औं भर दे विच लुट लितारु
उत्पे जाम रूप दी सार नहीं
उत्से भोद भग दा जाल नहीं
उत्से दरवन वाला कोई नहीं
निधन दीया ज्योता जगीया ने

26

31

January
Tuesday

1989

इक बार भजन नारले पुनिति का भत्ता करले
काट जाएंगे दुरव सारे हरि ता सिंगरण करले

थह चोला मनुष्यतन का दूर बार नहीं मिलता
जो दूट गया डाली से वो पूल नहीं रिलता
अब वक्त अरे पागत तु नाम भजन करले

व्यर्थ न गर्वा देना जीवन की यह वड़िया
अनगोल रत्न है यह स्वांसो की यह लड़िया
जिबा न चले शुरु से तु नाम रत्न करले

कानों से हरे नर तु सुन जान की महिमा की
हृष्प को गहरा नारके बन जा पूर्ण जानी
दो दिन की जिन्दगानी धुल जेकर कर्म करले

मस्तानो की होली मैं तु नाम लिरता अपना
फिर साफ जजर आए दुनियों हैं द्वंद्व सपना
अब शुरु चरणों में तु जीवन को सफल करले

1

February
Wednesday

1989

इस मारी में सुन मेहरबां
जब तलक स्कर्भी प्रवास हो
तेरी प्रीत न विसराऊँ, भैं
घही होठो पर अरदास हो

दुनियाँ का मेला है रंग भरा,
कहीं रवोन जाऊँ मैं भीड़ में
तेरी ऊँली न छोड़ कभी
तूँ दिल के मेरे पास हो

ऋतु आएगी ऋतु पाएगी
मेरी विनती है मेरे साहिबा
वरसात तेरी मेहर की
जीवन में बारह मास हो

तेरे भक्तों के चरणों से है
जन्मत उपाधा कहीं नहीं
मेरा सर झुका रहे क्षुर पड़ी
तूँ हर जगह मेरे पास हो

सब को मिले तेरी वरवरीयों
सख को मिले तेरी रहगते
चेहरे पर रौनक रहे सदा
दावा न तेरा उद्घास हो

सत्संग है मेरा आईना
रखद को सताँफ़ प्रीत से
तेरा वचन हुक्म हो मेरा
तेरा खोल मेरा लिवास हो

28

February
Thursday

2

1989

उसने मन को जीता है जो जीते जी मर जाने का
बोही भुक्ती पाता है जो सतगुरु का बनजाता है

जगत के कर्मों के बन्धन में
कल्पिन का अभिमान है
जीते जी मर जाने का
इक साधन ही गुरु ज्ञान है
देहध्यास मिट जाता है
जो समद्रष्टि हो जाता है

मोह माघा के बन्धन में फ़ास कर
जिसने अपने को नहीं जाना
सत और असत को जाने बिना
इस जगत को ही सत है माना
उपदेश ये जीता के चल कर
अर्जुन कृष्ण बन जाता है

भगवान की पूजा बस है यही
जिसने अपने को जान लिया
इस आत्म रस के प्याले का
मस्ती से जिसने जाम पीया
इस मस्ती में जो मस्त हुआ
वो मस्ताना कहलाता है

ये सारी दुनियाँ जानी हैं
हर चीज यहाँ बेगानी है
ये जिसमें तेरा इक मन्दिर है
जिसमें जागती ज्योत नुरानी है
शमा पर परवाने की तरह
जो जह-२ कर मिट जाता है

२९

3

February
Friday

1989

खड़ी आपी घड़ी उंची सोनु आपरे
सांतो सेती गोठी जो विनेह सो लागरे

कबीरा मन पांची भयो उड़ २ धृष्टि दिस जाए
जो औरी सगंत करे वैसों ही पात पाप रे

कबीरा जिस मरने से जग डरे मेरे मन अनन्द
मरने से की पाहूमा पूर्ण परमानन्द रे

कबीरा सुभरनी काहु की क्या दिरतलाए राम-
हृष्टग रामा न चोतिथा धृष्टि सिगरण न्या होररे

कबीरा माट्ठा काहु की चाहा लो पिरोय
अन्दर दुष्टी पाप की नाहर राम लाम होररे

कबीरा कोडी द जोड़ के जोड़ यातारव नहरोड़
बलती लार ना दुष्ट चले लिया तगोटी तोड़ रे

कबीरा राम नाम बी लूट है लूट सके तो लूट
अन्त समय पदलतारहगा जब प्राण पाएंगे धूट रे

कबीरा टैट गरा रोगी मरा मरा सवाला संसार
एक तक्कीरा ना मरा जिस कोडी ना रोतन हारे

कबीरा सगंत दोजने एक तक्कीर एक राम-
राम तो दाता भुक्ती के सांत जपावे नाग रे

30

February
Monday

1989

एक गुरु का द्वार वाह साँई वाह
एक गुरु का वचन " " "
एक प्रेमी की पुकार है " " "
वो चाहता है शान्ति " " "
शान्ति उसको तभी मिलेगी अपने को मिटाए

एक गुरु का द्वार " " "
सत्संग में है जौज वाह साँई वाह करो अन्दर की खोज
दुरव होगे दूर...मिलेगा आनन्द आपार

एक गुरु " " "
इच्छा अहंकार में न जाना " " " कर्गी स्तुतु वृक्षना
चे घड़ियां अमोलक छेसे न भवा

एक गुरु " " "
निष्काम में शान्ति " " " दुरव दर्द मिटाना " "
मुक्ति तब मिले जब बेने सर्व का

एक गुरु " " "
भून नित करना " " " आनन्द में त्वरणा " "
निज आसन आज्ञा चक्र में बना

एक गुरु " " "
द्वर्जन किस को होगा " " " शहस्र मन में जो होगा "
सच्ची शारण जो लेगा बेड़ा होगा उसका पार

एक गुरु " " "
राग द्वेष को मिटाना " " " प्रेम भवितो में तु अना " "
समता में आर के पुम्ह को रिभा - एक गुरु मे

सच्ची लक्ष्मा में आना " " " पनके विश्वास मेरहना " "
गुरु की जजर से निहाल हो जा - एक गुरु " " "
सब रसो लो छोड़ " " " एक आम में जोड़

शान के आनन्द में संसार बो भूला - एक गुरु " "
एक गुरु का वचन, प्रेम, भावनि - जान

1989

February
Saturday

4

कबीर वैद को हुंबड़ा दारू मेरे पास
भह तो वधा गोपाल को जब भावे ले ले रे

कबीर माया डोलनी पतन मालोरन हार
सन्तन मारवन रवाइया घार पिर संसार रे

कबीर छुत्ता राम का गोतिया गोरानाम
गले हमारे जेकड़ी ज्यु रिवेचे ट्यु जाए रे

कबीर न्योट स्मेहली सीलगी लोगत लियो उसों
चोट सहाय धावद की तिस गुरु तो मैं दास रे

कबीर मैं क्यों चिन्ता नहु मग चिनो नमा होए
झेरी चिन्ता हरि करे मुझे ना चिन्ता होए रे

कबीर सगंत खाप्प की झाड़िल आते थार
लेरवे मैं तो ही घड़ी लाली साल बरलाद रे

कबीर कसौटी राम की रुंछा टिकेना कोग
राम कसौटी सो सहे जो गरजीता होए रे

Sunday

31

February
Tuesday

7

1989

ओम है जीवन हमारा ओम पुणाधार है
ओम है कर्ता विधाता ओम पालन हार है

ओम है दुख का विनाशक ओम सर्वानन्द है
ओम है बल तेज धारी ओम करुणानन्द है

ओम सब का पूज्य है हम ओम का पूजन नारे
ओम ही के ध्यान से हम शुद्ध अपना गनारे

ओम के गुरु मन्त्र जपने से रहेगा शुद्ध गन
लुद्धि दिन प्रतिदिन बढ़ेगी धर्म में होगी लगान

ओम के जप से हमारा ज्ञान बढ़ता जाएगा
ओम का ये जाप हमको मुक्ति तक पहुँचाएगा।

32

8

February
Wednesday

1986

ओ कितने बड़े हम आयवान
दास्तान कैसे सुनार
ओ मिला हमें जिलोकी जाध ऐसी खुशी कैसे
दियाए

उनके कादगो मे कानि को पाया
हृष्य में कोमलता मन में शिथलता
रिवला जीवन होके गुलजार खुशबू कैसे दियाए

उनके वचन जैसे अमृत की धारा
पिया जो गऱ्हने जग से हो न्यारा
खुशी २ भूमि दिन रात ऐसी खुशी क्यों न गनारा

कोटि जन्मो के पुत्य उद्य हुए हैं
दूनको तभी तो प्यारे प्रभु मिले हैं
करे न्योन जीवन उद्धार
ऐसी घड़ी कैसे गवाये

दादा लद्दमी है प्यारा नाम कुछ ऐसा
जिसकी जुबा पे तो चमके पूनग सा
रिवला रहे वो लारो मास
लार ना उजपे अमावसा

33

19

February
Thursday

1989

ओ मेरे सतगुरु दधाल सतगुरु
कमा नूने मुझ को नहीं दिया है
अरवंड रवजाना देकर भी कहते
कि मैंने कुछ भी नहीं दिया है

जहोंने मुझ को छुकराया
तुम्हीं ने मुझ को गले लगाया
विकार स्थित इस देह को तुमने
अपने ही प्यार में भुला दिया है

जिस मन ने गुण को मापा में फँसाया
उसी से तुमने अहन सिरवाया
जो राज करता था पहले गुण पर
उसी को नौकर बना दिया है

कर्खने शुक्रिया किस जुबा से तेरा
तुम्हीं जे काटा आवागमन है मेरा
शोन की ज्योति जला के तुमने
अन्धेरा सारा भिटा दिया है

जन्म २ के मेरे स्पर्शी
मैंने समझी तेरी जात
तेरे मेरे का भेद भिटा के
अपने में मुझ को मिला दिया है

स्वप्नार्द्ध का पालन तुम्हीं ने कराया
अशोक रहना मुझ को सिरवाया
बेगमपुर की शहनशाही देकर
आनन्द स्वरूप बना दिया है

34

10

February
Friday

1989

ओम अद्वार बोल मन में असृत धोत
मूर्दे ने आँखे बाहर से तू भीतर आँखे रखोल
उठ माघ के सप्ने से मन ज्ञे असृत धोह

कर्म न कर ये जान के तू
बीज न बो अभिमान के तू
काम क्रोध जन्मे माघ से
भेद भाव जन्मे काघा से
असृतमा चैत्सपने से मन में असृत धोल
कछवे बोल ना बोल

तू ही नहीं तेरा सब कुछ क्या
तू ही नहीं तो दुर्ख सुख न्या
इन्द्र जाल है सैव ससार
सत्प रूप तेरा पार ही प्यार
शोन है ये अनन्मोल

कारता हो गे धत्न ऐसा
हो जा लहरते रे मस्त ऐसा चान
हो जा रक्ष प्रभु के संग
होगी नहीं ये समाप्ति भग
शोहनानन्द में डोल

35

11

February
Saturday

1989

कुछ ऐसे सतगुरु होते हैं
जो मंजिल तक पहुँचाते हैं
मेरे दादा लद्दी ऐसे हैं
जो सच की राह दिखाते हैं
जो सतगुरु का बन जाता है
वो जीवन भर सुख पाता है
दुनियां का भूषण नाता है
दो दिन में ही दूट जाता है
वो सच का ऐसा जाता है
जो जीवन भर का सहारा है
विगड़ी छुई चाहे जीवन हो
सतगुरु के संग सुलगाजाता है

रान का दीपक जलते ही

अक्षान न को रहता है
और प्रेम का दीपक जलते ही
मन गन्धिर बन जाता है
जिस दिल मे प्रेम का लीज उगे
वो इक दिन फल हो जाता है

जब से देखा है सतगुरु को
अब और न कोई दिखता है
अक्षान का पर्दा हरते ही
जीवन जगमग बन जाता है
जिस तो गुह की जगर पड़ी
वो दिल दिलतर बन जाता है

36

13

February
Monday

1989

किया मैंने सन्तो से व्यापार
 किया मैंने साप्तो से व्यापार
 किया मैंने सतगुरु से व्यापार

~~मैं २ दे के लिया हूँ~~
~~हाथ भरे बहुकाह~~

हो मैं दे के नाम लिया हूँ
 चिन्ता दे आराम - २
 भूषा धन कर भेट लिया हूँ
 धन सन्तोष अपार

मैं २ दे के तू तू लिया हूँ
 हाय २ दे वाह वाह
 गम कर भेट मिली निर्भपता
 दान दे के दातार

छोटे पर के नदले मिला हूँ
 पर सारा सासार
 पिछला घाटा पूरा करके
 जपा पाया हूँ अपार

रख से प्यार कर मैंने जीता
 जगत सरे का प्यार
 सिर दे कर मैंने सालत पाया
 मुफ्त में गुलज़ि लार

37

1989

February
Tuesday

14

कोन कहता है के दीदार नहीं होता है
 आदमी खुद ही तलबदार नहीं होता है

तुम इसे प्यार करो तो ना तुझे प्यार करे
 देखवार इतना तो करतार नहीं होता है

तुम पुकारो तो सही हृष्म से इकलार उसे
 देखवना कैसे तो साकार नहीं होता है

जब लुलाते हैं अपनी खुदी को मिटाकर
 तो किर भगवान से इन्कार नहीं होता है

जब तलक तू अपनी खुदी को नहीं मिटाएगा
 तो किर भगवान का दीदार नहीं होता है

37

उठत सुरिया बैठत सुरिया
 भय नहीं लागे जहाँ ऐसा बुझा

राखा रक दमारा स्वामी
 मकाल घटा का अन्तरधामी

सोई अचिन्ता जागे अचिन्ता
 जहाँ तहो प्रभु तू वर्तन्ता

पर सुख ढासया वाह सुख पाया
 काहे बानक गुरु मन्त्र दुदाया।

15

38 :

February
Wednesday

1989

कुछ लेना न देना मगन रहना
 कवीरा तेरी भोपड़ी गल कटियन के पास
 जो करेगा सो भरेगा तू क्यों भयो उदास

पांच तत्व का बना है पिंजरा
 जा में बोले मेरी मेना

गहरी नदियों नाव प्रशानी
 खेवटिया से मिले रहना

तेरा साहिब है तुझ मांही
 सरकी रबोल के देख नैना

सब कुछ तेरे हैं पर माही
 आनन्द में तू मगन रहना

कहुत काकीर सुनो भई सापो
 गुरु चरणों से लिपट रहना

39

February
Thursday

16

1989.

कहे किससे सुनार क्या चरता जिसने लिजाने
 चाहे कोई कहे शानी था पागल ही भले जाने

मेरे चक्रमक युं न जानी है
 न यु ज्योति दमकती है
 बहुत दिन की पड़ी आदत
 ना बातों से बदलती है
 जो सिर रखता हृचोली पर
 तो जाता जांके गाने

मेरे गुरु देव जे गुरु को
 पिलाया जाम उरा रस तां
 भरा भण्डार था जिसमें
 दिरवाया मार्ग उस घर का
 महक उसकी नज़ा उसका
 पीया जिसने वही जाने

इन लोगों को जानने की
 बहारो में जजा आता
 हमें तो दिल की दरगाह ने
 दिरवता हैं कही ट्यारा
 कि जिसकी रोशनी हरदग
 लगी इस जग को धगकाने

40

17

February
Friday

1989

कुछ ना बिगड़ेगा तेरा
 सतगुरु शारण आने के बाद
 हर रुक्षी मिल जाएगी
 कदमों में भुक जाने के बाद

जब तलक है भेद मन में
 कुछ नहीं बन पाएगा
 रंग लाएगी थे मस्ती
 भेद मिट जाने के बाद

धैर की मंजिल के रही
 कष्ट पाते हैं जरूर
 बीज फलता है सदा
 मिट्ठी में मिल जाने के बाद

पूलों से मत पूढ़ना
 द्वारा है उनपे कमों बहार
 कब तलक काँटों पे सोया
 ढाल पर आने के बाद

देरव के लोली रात को
 ऐ भवंर मत हो उदास
 अन्द कलियाँ भी रिलेगी
 रात ढल जाने के बाद

पार कर निछकाम निर्मल निष्पच्छ कर धनशामका
 सूखी बगिया भी रिलेगी नहु बदल जाने के
 बाद

41

February
Saturday

1989

कालघुग विच तेरा अवतार हो गया
 सोहने स्वरूप अन्दर ओ मोहने स्वरूप अन्दर
 दुरवी जीवां उते तेरा उपकार हो गया सोहने-

न्यारी उमोत जगत विच आई ए हां आई स
 किलोकी विच धूग मचाई ए हां मचाई स
 कौने २ विच तेरा उपकार हो गया सोहने-

धैर प्रेम के भण्डे रवोल के हां रवोल के
 देन्दे अद्वा ते भाव नाल तोल के हां तोल के
 प्रेग भक्ति वाला सच्चा व्यापार हो गया सोहने--

शोभा सुनजीव शरणी आवंदे हां आवंदे
 पान्दे दृश्नि ते खुशियाँ मनावदे हां मनावदे
 कोड़ी घड़ के ते हीरे ढा व्यापार हो गया
 सोहने - - -

४२

20

February
Monday

1989

किसी के काम जो आए
उसे इन्सान कहते हैं उसे भगवान् कहते हैं
पराया दर्द अपनाए उसे इन्सान

कभी धनवान् है द्वृतना, कभी इन्सान निर्धन है
कभी दुरब है कभी सुख है इसी का नाम जीवन है
जो गिर कर भी सम्मल जाए उसे इन्सान

यह जीवन सूक्ष्म उल्लभान है कही घोरवा कही ठोकर
कोई जीता है हस्त कर कोई जीता है रोकर
जो मुश्किल में न घबराए उसे इन्सान

अगर गलती खलाती है तो वो राह भी दिखाती है
मनुष्य गलती का पुतला है कि अक्सर हो ही जाती है
जो गलती को न छोड़ राए उसे इन्सान

युभरने की तो रेसे ही पश्च भी देट भरते हैं
जो तन मन धन को लुटवाए उसे इन्सान

४३

21

February
Tuesday

21

कष्ट गिनती की साँसे है दो पल का नमाझ
जिन तेरे कुछ भी नहीं, सब गुण पसारा है

न एक रिलाई है इन्सान, रिलोना है
सब एक तसारा है हसना है भा रोना है
मिटती हुई परदाई देती यह इशारा है

बचपन है जानी है मजबूर बुढ़ापा है
जीवन जिसे कहते हैं काई रंग बदलता है
बीता हुआ हर पल ही देता यह इशारा है

जब तक वह न चारा नाचेगी यह काषुताली
सब रवेल रवतम होगा डोरी जिस दिन टूटी
लहरों की तरह फानी जीवन की यह धारा है

४४

धन्या जाने दम कोई को यार न्या जाने दम बोई

सप्ले अन्धर साजन मिलथा रुद्धिमांकरै सोई
उठ बाहूं मैं न जर न आवे अं दृढ़न शाहर सदोई

चोले अन्धर जो कोई बोले धार मेरा सोई
जिद्दे जाल मैं निहरा लगा मैं भी जोगन होई

बुलेशाह न शाह नियाहत शोल शंसाब बितोई
मैं भी पिवन मस्त जो धिवन साफो साफु भी होई

22

February
Wednesday

45

1989

कि सी नाल राग नहीं कि सी नाल द्वेष कही
आत्मा आनन्द सदा कोई वी कलेश नहीं

समझ न आये मैंनु कि हृदे नाल प्रेम जोड़ा
सब धूट राम वसदा कि हृदे वल मुंह मोड़ा
दुनियाँ सराथ विच रहना हमेशा नहीं

आला आनन्द

मन्दा किनू बोल बोला कोई मेरा और नहीं
सारे मेरे अपने ने कि सी नाल वेर नहीं
सारेमा तो वरवरा अपना वीदेश नहीं

आला आनन्द

हाकिम बन के कित्पे हृष्म बलावाँ मैं
बन के भैरवारी कित्पे हृष्म नू पैलावाँ मैं
भूल सकदा ना मैंनु लोल उपदेश नहीं

आला आनन्द

कि सी नाल लोन देन स्नार्थ व्यवहार नहीं
बिना स्वरवप मेरा किसी जाल प्यार नहीं
गुरु वाणी जाया मैंनु और उपदेश नहीं

आला आनन्द

23

February
Thursday

46

1989

गुरु ब्रह्मज्ञान वाले तीर मारदेनी सद्यो
जिन्हू लगदे उन्हादें मन नहीं पो डोलदे नी सद्यो सच्च

गुरु अचरज पुक्ति बतावदे हा बतावदे
विच ग्रहस्थ दे मस्त बनावदे हा बनावदे
तो तो चित जड़ ग्रन्थि नू रखब तोड़ दे नी सद्यो सच्च

मेतमाशा है ये दुनियाँ भे दुनियाँ

जिसदा अन्त ना पाया ऋषिया गुनिया - ज्ञानिया -
ज्ञानी इस दी गहराई विचो मोती रोलदेनी सद्यो -
०

ब्रह्म विद्यादा गहना पालो हां पालो
राग द्वेष नू मार निकालो हां निकालो
पेर बोल जिवे बना विच व्होर बोलदे नी सद्यो
सच्च

47

24

February
Friday

1989

गुरु के समान नहीं दूसरा जहान में

थही वेदज्ञति का हते गुरु बिनाक्षण नहीं
ज्ञान बिना भवित्ति कैसे आए तेरे च्यान मेंद्विव स्वप्नजानो गुरु विष्णु के स्वरूप हैं
साक्षात् ब्रह्म जानो लिरवा हैं पुराण मेंसत्त्वगुरु की सेवा कीजे छलकमट सब धोड़ दीजे
ज्ञान गुरुव की शरण ले के मस्त रहो निजं घमगेंकास से छुड़ार गुरु कोप से बचाए गुरु
मोह से छुड़ार गुरु रकेलो जी निवाणि जें

48

गोविन्द के गुण गाओ साथो गोविन्द -
मानुषजन्म अमोलक पायो वृथा काहे गवाओपतित पुनीत दीनबन्धु हरि
शरण ताही त्रुम आवोगज को गास निटो जेही सिफरत
तुम काहे विसराओतज औमभान मोह माया पुनि
भजन राम चितलाओनानक काहत मुक्ति पथ रहो
गुरुव मुख दोय त्रुम पावो

49

1989

February
Saturday

25

गुम होइके वेरव नजारा आप सारा
महबुब की सुरत में हां सच्चे साई दी सुरत मेंररव झूर जामाल नज़र विच
तस्वीर निगाह अन्दर विच
सुन आशिक इश्क इशारा निरिह नगारा आपररव च्यान द्वको दिलवर दा
दूम २ विच रवौफ रत्सम दा
दिल कर तू जिस्म विसारा आरिवर गुजाराजिस विच महबुब समावदा
फिर मौत न उस पर आवदा
सानू कसम रसूल रुदा दा कर खिलराविच विरह बेरबुद्द होई के
जिंद जान कनू हृष्प पोई के
पीद्धे भारी नीहं नगारा अनलहुक नारासानू पीर मुखां परमाया
वहिदत दी राह बताया
बलिहार जाऊं बलिहारा नानक एयारा
युसफ प्यारा -

50

27

February
Monday

1989

गुरु सुखबन के गुरु धरणों में
आज मेरा नेहा पानम हुआ
नाम रूप का अन्त हुआ
जगत का भूठा नाम गया

भूत की वाणी भालके जिसमें
मैं वो तराने भूल चुका
समता ही नई मंजिल मेरी
गुण अवगुण मैं भूल चुका
अब शान्त हूँ मैं आजाद हूँ मैं
कोई काम नहीं अब आहो मैं

टूट गए मोह ममता के बन्धन
आज कोई जजीर नहीं
जगत के भूठे नाम रूप की
मन में कोई तस्कीर नहीं
खुद आद हूँ मैं और अन्त हूँ मैं
व्यापक हूँ सारे नजारों में

सफल हुई मम आत्मा साप्तना
मन को अनोखा ज्ञान मिला
गुरु वचनों से गुरु सुख होके
गुम्फ वो नेहा वरदान मिला
अब अजर हूँ मैं और अगर हूँ मैं
महा काल को काल से क्या डर है

5

28

February
Tuesday

1989

दृष्टि
गुरु के ज्ञान में जो शान्ति है
वो ही धरण को साप करती है
दादा ने बीज जो उगाए हैं
एक दिन उससे पाल निकलते हैं

जब से डोरी गुरु से जोड़ी है
तब से जीवन गुरु ये तेरा है
अब तो दूजा नजर नहीं आता
सब में तेरी ही भालक दिखती है

देह में सब विवार होते हैं
गुरु देह से भी मुक्त करते हैं
एक अहंकार जब निकल जाता
सब विवार खुद खुद निकलते हैं

रंग लाघेगी सचकी ये महणिल
मिल गई सतगुरु से है मंजिल
अब तो सच ही हमारा जीवन है
जिन्दगी सच में ही गुजरती है

1

52

March
Wednesday

1989

गुरु ने दिया आत्म शान
बना मन मन्दिर आतीशान

गुरु ने जल में गुरु ने धूल में
गुरु ने डाल के हुर पातन में
लखाया अपना रूप महान

गुरु ने प्रेम अमृत वरसाया
कर्त्ता अहम का भार मिटाया
कराया निजी स्वरूप वाजान

गुरु ने सारा अम मिटाया
बेझन्त का अन्त समझ तब आया
वट ५ बस्ता राम ही राम

गुरु ने अजर अमर लतलाया
बन्धन से मुक्त तभी हो पाया
मिला शुरू चरणों में आनन्दधाम

53

March
Thursday

12

1989

गली प्रेम वाली अज कात्लगाह बन गई
जान देवनेंदी मेरी वी सलाह बन गई

असां शाम दे छारे उते डेरा ला लिया
लोक लाज वाला पल्लानी मैं मुँह तोला लिया
नी मैं बाज दे गवले नाल प्यार पा लिया
मेरी जान गई रेदी ते अदा बन गई

असां आज्ज छोली अज रवेलनी मुरारी नाल जी
रंग रंगे जाने रंग लेलतारी नाल जी
होनी हार जीत प्रेम दे पुजारी नाल जी
मेरी चुन्नी ते रंग दी गवाह बन गई

अज देरवने हजुर दे गस्तर केडे ने
गली प्रेम वाली आन दे दस्तूर केडे ने
कात्ल बारन विचकातिल मशाहूर केडे ने
मेरी चुन्नी ते रंग दी गवाह बन गई

54

3

March
Friday

1989

गुरु देव मेरे द्वारा हम को रेसा कर दे
सेवा सिगरण सत्संग भोली में मेरे भर दे

नफरत जो करे हमसे हम उससे प्यार करे
करते जो हमारा बुरा हम उसका सत्कार करे
नफरत को मिटा के तुम प्यार का रंग भर दे

मेरे मन के मन्दिर में गुरु देव ही बस जाए
जिसको भी देखूँ मैं तेरा रूप नजर आए
दे ज्ञान का अमृत रस जीवन को सफल कर दे

शब्दरी की तरह सेवा और प्रेम हों मीरा सा
अद्वा हो तुलसी सी और लोल कच्चीरा सा
करे अर्ज सदा प्रेमी सतगुरु पूरी कर दे



55

4

March
Saturday

1989

गुरु देव से निराला कोई और नहीं
बेड़ा पार हागाने वाला कोई और नहीं

माया के लो बन्धन तोड़े प्रभु चरणों में प्रीति जोड़े
सारे दुरुव मिटाने वाला कोई और नहीं

उपनिषदों की कथा सुनाए मेरे मन की व्यथा भिटाए
सारे अम मिटाने वाला कोई और नहीं

जीत ईशा रूप समझावे सतचित आनन्द रूप बनावे
जन्म मरण मिटाने वाला कोई और नहीं

वे तो आत्मज्ञान करावे हृष्य का अज्ञान मिटावे
मुक्ति च्याम दिलाने वाला कोई और नहीं

ऐसे सतगुर के गुण गायो राजेश्वर त्रुग सीस भजाओ
भव का बन्धन छुड़ाने वाला कोई और नहीं

5 Sunday

56

6
March
Monday

1989

चाहे सुख दो चाहे दुख दो
 हमें सब कुछ तेरा मंजूर है
 औ मीत मेरे गाँड़ में गीत तेरे
 हमें सब कुछ तेरा मंजूर है

55

उस दिन मन ने १९ अप्रैल को भगवान्
 रणनीति लिया था,
 वे - वे ने भगवान् - वे - वे, मैं भगवान्।
 दरब में नन माझे दौरा ना, बाद में ना तर ज़,
 जीवन लाजी जीता, देलाजो लाइ ले
 दृट गया है भुमि पर दृठों का ना मन उपभोग
 मन सत्संग, अड़ेल, वाह छुका दुन फोर्क,
 दृढ़ अनुष जन घर, राहे रहोमार भा-
 भील गुरा ते उआइ ना उजाचा ना भूइ दृफान
 वे - वे ने भगवान्
 गुरा ही राहे दिरतार।

57

March
Tuesday

7

1989

जग है सराय कोई आए कोई जाए
 भूल के यहाँ कोई मन न लगाए

आसमान पे सितारे हैं जिन्हे
 तूने पाप किसे है दृतने
 कोई होगा तेरा सोच ले तू जरा
 पिर काहे को पाप कमाए

तुण्डा बढ़ती ही बढ़ती जाए
 आयु घटती ही घटती जाए
 नित नई आस है नित नई प्यास है
 कोई काहाँ तका इसको लुभाए

उलझा जग के भासेले में आकर
 भूला प्रभु को दौलत पाकर
 वक्त युँ ही गया तूने कुछन किया
 सारी आयु तेरी बीती जाए

यहाँ नाता है बस पैसो का
 प्यार किसका रहा प्यार कैसा रहा
 यहाँ भाई ही भाई को रखाए

58 :-

8

March
Wednesday

1989

जो मरती की मरती को पढ़चानता है
वही मरत रहना भी खुद जानता है

सहारा मिला जिसको आलम गुरुका
वह खुद ही खुदी को खुदा जानता है

ये सब जी रहे हैं तेरे ही रहम पर
तू रोते कुरु को हँसा जानता है

तुम्हें कुछ भी बनना बनाना नहीं है
जो तू है उसे प्रभु जानता है

खुदा तेरा लुभ से जुदा ही नहीं है
असल भेद सारा तू ही जानता है

59

9

March
Thursday

1989 जराजीव विचारो मनमें
तेरी आ० का कैसा स्वरूप है
मेरे देह नहीं है तेरी आत्मा
तू तो सत चित आनन्द रूप है

यट पट का द्रष्टा घट पट में जैसे
जगत में है सबसे न्यारा
तीन देह का द्रष्टा तू है
तीन देह से है न्यारा
तू तो साकी चेतन ब्रह्म रूप है
तू तो अजर अमर विभरुप है

यट उपाधि से महा आवाहा ही
यट आवाहा है कहलाता
अन्तः करण उपाधि से ही
ब्रह्म जीव है नहलाता
तज देह उपाधि ब्रह्म रूप है
जैसे त्रिन्द्र भी सिन्धु का रूप है

हस्ति भांति प्रिय नाम रूप थे
पांच अद्वां जग में दिखते
इनमें तीन ब्रह्म रूप हैं
जगत रूप है दो लचते
नाम रूप जगत का ही रूप है
तू तो हस्ति भांति प्रिय रूप है

राजा कालड़िका रूपने में जैसे
अपने को निर्बन्ध माने
राजेश्वर तू मोह निशा में
उपने को कुरिया माने
तू तो जगत के भी जगत का भूप है
अज्ञान से भरा भव कूप है ये देह ①

10

March
Friday

1989

जगत के रंग क्या देखु तेरा दीदार काफी है
 करूँ मैं च्यार किस रस से तेरा इक प्यार काफी है
 नली आऊँ मैं सतसंग मैं तेरा दरबार काफी है

मेरे द्वे रिस्तेदारों ने कैलाया जाल भसता का,
 तेरे भक्तों में प्रीति हो यही परिवार काफी है

जगत की फीकी रोशनी से भे आरंवे भर गई मेरी
 मेरी आरंवों में तो केवल तेरा चमत्कार काफी है

जगत के साज वालों ने किस है कान भी बहरे
 कहाँ जाऊँ सुनु आनन्द तेरी अंकार काफी है

61

जो नर दुख में दुख नहीं माने
 सुख स्नेह और भग्न नहीं जाके कच्च भाटी माने

नहीं निन्दा नहीं अस्तुति जाके लोभ मोह अमिमाना
 हृक श्रोक ते रहे न्यारो नहीं मान अपमाना

आशा तुष्णा सकल ट्यागी जगते रहे निराशा
 काम क्रोध जिन्ह परसे नाहीं ते घट नैस निवासा

गुरु कृपा जेहि नर ते कीनी तीन मे जुगत पिछानी
 नानक तीन भयो गोबिन्द सिंह ज्यों पानी
 संग पानी

March
Saturday

11

1989

जगत में उनकी मिटी है चिन्ता
 जो तेरे वन्धनों में आ चूके है

ना पाया तुझ को किसी भी बल से
 ना पाया तुझ को किसी भी द्वल से
 वही परम पद पा गए है

ना पाया तुझ को अमीर लन के
 ना पाया तुझ को शरीर लन के
 उन्हीं को तेरे द्वारा है दर्शन

किसी ने जग में कारी भलाई
 किसी ने जग में कारी शुराई
 को ही मार्ग बता गए है

अपार माया पूर्ख तुम्हारी
 मलीन मन है मेरा भरवारी
 जैया पार लगाओ हमारी
 अब तेरे चरणों में आ गए है

12 Sunday

13

March
Monday

63

1989

जो रहम कीन होती गगवन घे दुग में आँख
धर व में कौन करता मालिक तेरी झलायत

गुजरिम न कोई होता हातिम ज तुँगी होता
सूनी ही रहती हरदम खिलबर तेरी अदालत

त्रणान में किसी का डोला इमान निश्चती
मल्लाह बन के मालिक करता तुँही हिणावत

रहमत चे तेरी मेरे करते हैं नाज गुनाह भी
कर दोगे माफ मुझको मे तेरी है बादशाहत

आशा रखु में दिल में तेरे सिताय कैसी
तुँही आप्सार मेरा तुँही है मेरी ताकत

आरंगो को आँसु साजन तुने ही तो दिए हैं
आकर के ले हो वपिस अपनी तो ये अगानत

64

March
Tuesday

14

1989

जब आपने ही धर में रुदाई है
तो काबे में सजदा कौन करे
जब दिल में रुधाले सनाम हो बसा
तो गैर की पूजा कौन करे

तु बर्कि गिरा में जल जाऊँ
तेरा हूँ तभ में भिल जाऊँ
हो मुझ से रवता और तु बरक्षादे
चे शेष का अगड़ा कौन करे

हम मरत दुर बेताद पिस
साकी की नजर के सख्ते में
अन्याम चे डाले कौन नजर
पी ली है तो तोवा कौन करे

अब उनकी रजा पे छोड़ दिया
आबाद करे बरबाद करे
उनका धा उनको सोंप दिया
दिल दे के तकाजा कौन करे

तु सामने आ मैं सजदा कासु
तब लुत्फ है सजदा करने का
तु और कही मैं और कही
गो नाम का सजदा कौन करे

पर्द ही तलव सब सजदे हैं
सजदे ही तलव सब पर्द हैं
जब पर्द उठा तो आप हुआ
पिर आप का सजदा कौन करे

15

65

March
Wednesday

1989.

जहाँ तक जाती दृष्टि है
वहाँ तक दौली रुष्टि है
शर्त मग रूप है - २

मैं हूँ सख मे और ना कोई
मेरी उम्मीदि सब घट पुगत होई
रुसा अद्युत रूप जाने कोई ग्रुप सर्व-

गुफ से उत्पन्न है स्सारा
चाह सूरज विघ्न तारा
जगजगाती रुष्टि है सारी आत दृष्टि है

इन्द्र जाली जाल विश्वा
इश्वर जीव धन देखन आया
आप से आप ही भूला
जाया के भूम में भूला सर्व गण रूप है

मैं जाले हैं विश्वा, बनाए

मैं भूले ही भूले हैं विश्वा

66

March
Thursday

16

1989

जो मिलना है भू से तो मिल पहले ~~इन्द्रजल~~
कैसे दर्शन देजा मालिक बिन पुछे दरबान से

भेद भाव के बन्धन और ऐ ऊँचीनीची दीवारे
भू से कैसे गिलने देजी तुम्हे नीच तो दीवारे
तुमने खुद मुश्किल कर डाला हर गुद्विल आसान

लारत चतुर तू बने मंगर वो सबसे बड़ा समान है
अपना आप दूपा कार बुनता जग वा ताना बाना है
चतुराई जा आए उसे वो प्यार करे अन्जान से

प्रभु को जो पाना है तुम्हो बन्दो का तू हो जा रे
अपना आप भूला तार और उसी गें रखो जा रे
नीचा सिर जो काम निकाले वो जा निलाले जान
क्या क्या " " " " , से

67

जो तू है सो मैं हूँ जो मैं हूँ सो तू है
ना तुम्ह आरजू है ना धूर्षे जुरस्तजू है

बसा राम गुढ में और मैं राम मैं हूँ
न इक है न दो है सदा तू ही तू है

उठा नबकि माया का पर्दा ये सारा
किया गम खुशी जो भी मुझ से निनारा

जुलां लो न ताकत न गतु को रखाई
मुझे मिल गई मेरी ही लाददाही

17

March
Friday

68

1989

जब सन्त सहारा बन जाए
फिर कोहे मन दाकराये -
जब पूर्ण गुरु है तुम्हें मिला
फिर कोहे मन अकुलाये -

किस जन्म के पुण्य जोगे
जो पूर्ण गुरु है पाया
तू प्रभु कृपा का पात्र बना
जो तूने नाम ध्याया
द्वारे पै दीपक जले तेरे -
तू अपना दीप जलाले

शुभ द्याइ है वो जब निश्चय हो
दर्शन की प्यास लुभेगी
तू मूक बना पिश्चाता
सतगुरु कृपा लरसेगी
मन मस्त रहे प्रभु चरणों में
तू मत श्री राम भूलाए

1989

69

1989

March
Saturday

18

जाग रे गुरुसाफिर तू रख्बाकी मे दुनियापर
होश क्यूँ गवाया है पल दो पल की खुशियों में

दर्द दिल में तू जगा सच की राह पाने का
साथ देगे तुमाको निराकार भत्ता है अगर जो अपार

आम के बन्धन में खुद को तुने जकड़ा है
दास्ताने कुछ भी नहीं तू तो मुक्त आत्मा है

देरव जरा नजरे उठा नूर सबमें है किसका
मूरत थे नजर ना टिका हस्ती पर तू ध्यान लगा

कर्म काढ़ भूल के सभी कर्ता रोग छोड़ दें अभी
जीवन मुक्ति आनन्द का सच्चा जलवा लेले अभी

हर कदम पे सोच विचार आता है क्या मनमें अस्तार
में की रट थे विसार बेड़ा होगा कब तेरा पार

सच के मोती है बेमिस्तु दिल की भोली पैलादे
तन मन में लगन तू लगा विसाल
सच की ज्योति दिल में तू जगा

70

20

March २० में है भावी अ. की 1989
Monday

कि सी झुम्ह वाली आरंहने पहचान

- 1- नाम देव ने पकड़ि रोटी कुतो जे उठाई
पीछे धी का कटोरा लिए जा रहे
बोले रुखी तो ना रवाऊ, स्तामी दी तो लेपणो
रुप अपना क्युं मुझ से दिपा रहे
तेरा मेरा स्क न्हर पिर वाहे नो हजुर
तुने शावल बनाई है स्तान वी
भूमि ओढ़नी उठा के इन्सान की
- 2- निगाह मीरा की निराली पी के जहर प्याली
झेसा गिरपर नसाया मीरा स्तास गे
आया जब काला नाग बोली धून्य मेरे भाग
प्रभु आए आज साँप के लिबास में
आओ २ बलिहारी वाले कुण्ण गुरारी
बड़ी कृपा है कृपा निप्पाज नी
बलिहारी हूँ मैं आपके अहसान की
- 3- इस तरह सूरक्षास निगाह जिनकी भी रवास
झेसा नशा था भर्व हरि नाग का
जैन हुर जब बनक तब मिला औ आनन्द
आपा नजर नजारा धनरुद्धार का
आई आरंह में रोषानी ज्ञान की
देवता भूमि २ गलवियाँ जहान की
- 4- गुरु नानक और कबीर जहाँ जिनकी नजीर
पते २ में देवता निरातार को
नजदीक और दूर वही हाजार हजुर
झेसा सार समाजाया रनसार को
आओ २ मेरे प्यारे रुले भाग्य हमारे
बड़ी मेरहनानियाँ हैं उस गेहरतान की

71

21

1989

March
Tuesdayजीवन की वडियाँ वृथा न रवो
ओम भजो हरि ओम भजोसाधी बनालो ओम को दिल मैंसिठा लो ओगवो
चाहर लम्बी तान न सो - - -ओम ही सुख का सार है ओम ही जीवन आप्यार है
वृति न द्वस्की मन से तजो - - -मन की गद्दी संभातिरु भवित्ति की और डलिर
इस के सिवा मार्ग न कोएचोला यही है कर्म का करने को सोढ़ा पर्मका
धोना जो चाहे जीवन को घोघट में हरि पहचान ले संवासिं की कीमत जानते
नर तन का पाना हो न हो

१२

22

March
Wednesday

1989

जीवन की दोर अब तो कारदी तेरे हताले
जग की बनाने वाले अपना गुम्फे बनाले

माया की डालिमों पर संसार का हिण्डोला ०
इसमें जन्म मरण के भूले तेरे निराले

जप योग ध्यान पूजन तुम्ह को रिंमना पावे
लेकिन मुझे दिखाए मन से भुलाने वाले

निर्गुण कोई बताए सत्गुण कोई बताए
खुद ही भटक रहे हैं मार्ग दिखाने वाले

जीवन की किरती सतगुरु मान्द्यार में पड़ी है
चाहे इसे झुको दे चाहे इसे बचा ले

भटके थे हम तो राहीं जग में मिला ना कोई
मिल गए गुम्फे सतगुरु जीवन बनाने वाले

७३

23

March
Thursday

1989

जिसके हृदय में हरि सिगरण होगा
उसका सफल क्षमों न जीवन होगा
भगत का भगवान् वो चिन्तन होगा उसका

सच्ची धारणा से प्रह्लाद ने जो ध्याया था
रवंभे से श्याम जी का दर्शन पाया था
जिसका सहारा रघुन्दन होगा

द्रोपदी ने द्रांचा कोवल-गार कच्चे धागो से
बदले में भेजी है हजार गज साड़िया
जिसका सहारा मन मीहन होगा

भगतो को तारने तारनहार आए हैं
जंगलों में झूँठे तेर भीलनी के रवाई हैं
कहुते थे कभी २ दर्शन होगा

बन के बैरागी गीत राम जी के गाए जा
तेरी स्नारी मुश्किले आसान थे बनारगा
जिसके हृदय में हरि नाम घन होगा

जो आए गुरु छारे उसका जीवन सफल है
मिट जाए उसका जन्म मरण है
काल का भी उसको इर नहीं होगा

74

24

March
Friday

भव से तरु खिलौ
जो देंगे गुरु को शीशा वही नर मुक्ति पाते हैं
जो करे उम्र से जीत वही नर मुक्ति पाते हैं

गुरु ही लाहा गुरु ही विष्णु गुरु ही शिव कहलाते हैं
कृष्ण बन अजुनि को सारे भेद अभेद मिटाए हैं
जो बनेगा अजुनि रूप वही नर मुक्ति पाते हैं

रथ शरीर और आत्मा स्वामी इन्द्रिया हैं योऽे
सारणी अपना गुरु को बनाए तो ही गन को गोड़े
जो सत चित आनन्द स्तुत वही नर मुक्ति पाते हैं

गुरु बिनशान दयान ना लागे तितना गन को गनाले
कह गए नहिं गुरुजन सारे गुरु तो मन गे बरणे
जो मन को है देते जीत वही नर मुक्ति पाते हैं

75

1989

March
Saturday

25

जात हमारी आत्मा परमेश्वर परिवार है
बैगमपुर के रहने वाले करते हम सब पार हैं

आओ जिसको पार है जाना सत्तगुरु नाव बनाई है
इस नैया में बैठ के सबने ध्रेम की चुनी रगाई है
राग द्वेष को दूर हटाओ कहते बारम्बार है

हम सबका है एक ही नारा गुरु मेरा अवंतर है
करने आया भव सागर से हम सबको ये पार हैं
वाहे गुरु नाम पाहाज हैं चढ़े सो उतरे पार हैं

जो बोई इसके द्वारे आवे करते हुकार हैं
पापी पुनी जो भी आवे करता भव से पार हैं
देव वे अपना आप ये तो आया दिलदार हैं

काटे लारव चौरासी सब की सबको छुवत बनाता है
ज्ञान तंग दान देकर सब के अन्दर ज्योत जलाता है
नजर झूरानी देकर हुसने सबका किया उद्धार है

भगतों के उद्धार की रतातिर धरती पर वो आया है
निराकार हो कर के भी साकार स्तुत भाया है
धोरवे में जा रहना भगतों आया कृष्ण गुरार है

27

76

March
Monday

1989

जो भी आया गिन गया मोहन तेरे दरबार में
भेद कुछ न रह गया बिनाने और रवरीददार में

सक नजरे कर्म नटवर जिससे तुम्हारी हो गई,
उसको पिर चिन्ता रही ना कोई इस संसार में

जिसके द्विल और आरंतो में मस्ती तुम्हारी या गई
वो ही शोहरत पा गया इस प्रेम के दरबार में

कैसा मीठा पाल मिला हगको तुम्हारी धाद में
दुनियां के सब नाते द्वृटे हैं इस तेरे पार में

गुणों को ठुकराया करते अवगुणों से प्यार है
थे ही तो आदत भली है मेरे कृष्ण मुरार की

इसे गर्जवया रही विराज और चमन में
दूर्दि का पर्दा उठ गया गिल गया करतार से

गिरहौ अन्दर राम बड़ूया वसता है
झाँग मानदरा के गांव रिंग लैगा है

77

1989

March
Tuesday

28

जो आत्मा में टिका दे वो शक्ति तुम्ही से नहीं
जो सब में लाल दिरवादे वो वृति तुम्ही से पाऊँ

मैं रोशनी हूँ सङ्क की अपनी जगह रवड़ी है
याहे डोली उठे था जनाजा नहीं हिली है नहीं डुली है
जो द्रष्टा मुझे बना दे वो शक्ति तुम्ही से पाऊँ

कुछ लेना है न देना दुनियाँ के इस भेटे में
वाही अज्ञा है न जाना आत्मा के इस रेते में
जो आवागमन छुड़ा दे वो ज्ञान तुम्ही से पाऊँ

मैं अजर हूँ अमर हूँ अचिन्तय हूँ अजन्मा
कूटस्प हूँ तटस्प हूँ ज्योति स्वरूप हूँ जृहा
जो जीवन गुवत बना दे वो मन्त्र तुम्ही से पाऊँ

- (18) ६५
- जिन्हे राम तेरे जाम वाला पीलौना
 - तुम्हा तेरी जीकी तिन्हों वो लैला
 - जिन्हे अन्दर राम पूर्वा वासदा है
 - उन्हे गगड़ा रुग्न के लिं लैजां
 - जिन्हे सुगंगा बड़त पारीयों जे
 - उन्हे रिष्टोलों तिन्हों लो लैला
 - जिन्हे जाम का रुग्न चढ़ जाहों है
 - श्रीकृष्ण लौला ही पूर्णम जाजर आदों है
 - जिन्हे अन्दर ज्योति पूर्व जाखादी है

29

March
Wednesday

1989

जीना है तो मौज से जी
हर दम आत्म रस को पी

आत्म रस को पी ले प्पारे मिथ्या भोग त्रुवारदे सारे
पल २ द्विनकृद्याई २ हर दम आत्म रस को पी

आत्म रस एक अमृत है जो जिसका संगत पान करे
अजर अमर हो जाए वही

पाया है मानुष का यह तन नर से त्रुबन जाना नारायण
तेरा बेवल लक्ष्य यही

सुरव से जग मैं जीना चाहो दुरवों से छुटकारा पाऊ
जिसका साधन भेद यही हर दग आत्म रस को पी

79

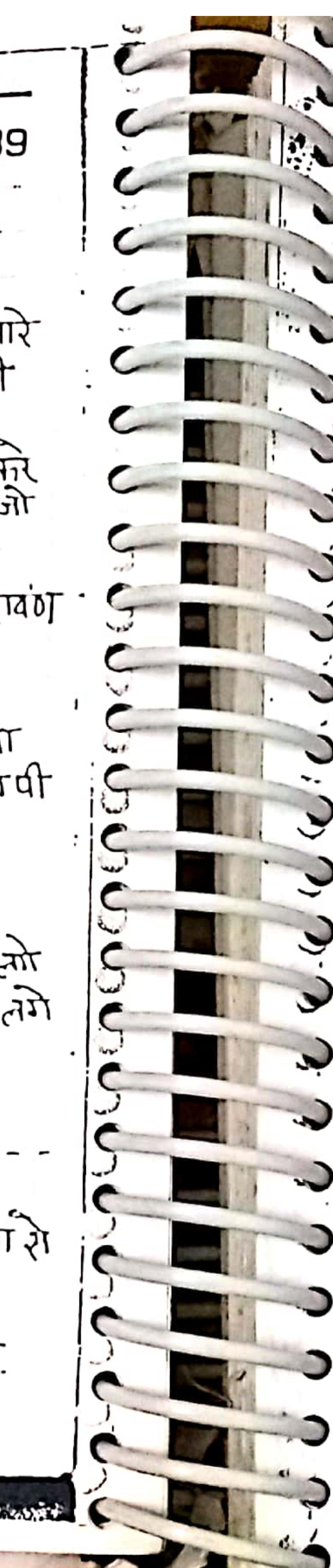
जग के आसूं जब थमने लगे, जगदीश के मोती बहुने तो
जग छोड़ दिया जगदीश चरा, अहंकार गिटा और बहुने लगे

ज्ञान भया अज्ञान गया मैं देह नहीं आत्म राह
अब दिल है भरा सन्तोष भिला, अहंकार - - -

दिल उबलगया झूठे जग से, मौज भिली सान्तन संग रो
भुझे दिवलागा जग है रग गे

आह्मार गिटा - -

10



80

1989

March
Thursday

30

जीवन दा मैनु आनन्द आ गया रु
कि जिस दिन दा से साकंरा आ गया रु

मैं कान्डे ते रखड़ी आ भेया मेरी भवंर में
के तारन को मेरे मल्लाह आ गया रु -

छूटी जाण दुरवा ते तन्द्रस्त होई थं
मौला मेरी कारने देवा आ गया रु

रु नजरा दे जादू निगाहा दे दूने
ओ मेरी नजर जू नजर ला गया रु
मैं सुरवा दी सेजा ते भौजा भनावा
जिस दिन का रु साकंरा आ गया रु

लोकी मैनु वाहंदे ने पागल दीवानी
प्रेम वाला नशा मैनु पिला गया रु
नशो वाला जीवन मैनु भा गया रु

चिट्ठी मेरी चादर न दाग लैगी जोड़ू
ओ रेसाललारी ओ रेषा ला गया ए

छड़े गुरुद्वारे ते मन्दिर मसीदा
मेरे मन्दिर साकंरा आ गया रु
मैं ओ बोल बोला जौ मुश्किल बुलावे
मैं की बोलन जोरी जो बुलवा गया ए

रल मिल के देवो रारे बपाईया
कि असली खजाने जू हथपा लिया

81

31

March
Friday

1989

जब मन मीठ होवे तब जग मीठ होवे
 फिर सुख मीठ और दुर्दण मीठा
 सब कुछ मीठा होवे

गुरु मुरन जो दुआ हर भेद रखुला
 और प्रेम दुआ और प्रेम दुआ
 प्रेम जहाँ होवे अब वहाँ होवे, फिर सुख - -

गुरु ने सिरबलाया श्रद्धा रखो
 और सक्ष करो और साक्ष करो
 सब जहाँ होवे सन्तोष वहाँ होवे - -

जो होता रहै सो होता रहे
 थी रवेल बना थे रवेल बना
 रवेल जहाँ होवे दुख सुख ना तहाँ होवे - -

जब भ्रम मिटा तब ब्रह्म धिरवा
 मैं एक रहा मैं स्क रहा,
 एक जहाँ होवे फिर दैत कहाँ होवे - -

82

April

Saturday

1989

जरातो इतना लाता दो भगवन
 लँगी ये कौसी लगा रहे हो
 मुझी में रह के मानी सो अपनी
 यह खोज कौसी करा रहे हो

ल्यय भी तुग हो तुम्हीं हो प्रीतम
 त्रेम त्रम हो तुम्हीं हो त्रेमी
 पुकारता मन तुम्हीं को क्यों पिर
 तुम्हीं जो मन में समा रहे हो

प्राण भी त्रम हो तुम्हीं हो स्पन्दन
 भैयन त्रम हो तुम्हीं हो ज्योति
 तुम्हीं तो लेकर तुम्हीं को ढूढ़ो
 नई घड़ लीला बता रहे हो

भव भी तुग हो तुम्हीं हो रचना
 संगीत त्रम हो तुम्हीं हो रसना
 स्तुति तुम्हारी तुम्हीं से गाँज
 नई घड़ रीति बता रहे हो

कर्म भी त्रम हो तुम्हीं हो कर्ता
 कर्म भी त्रम हो तुम्हीं हो धरता
 निमित कारण मुझे जना कर
 मह नाच कैसा जना रहे हो

2 Sunday

83

3

April
Monday

1989

जिसने हरि प्रेम को पाना है
सकल सुखों की त्याग कामना
प्रीति म हाथ निक जाना है

सुख दुख निन्दा में साम रहना
जीते जी मर जाना है
राम प्रेम में तन मन देना
मान अभिमान मिटाना है

गुरु आंखा में सीस अर्पकर
शग और देह बिसराना है
तिल २ धाव लगे जो तन पर
रण से भाग नहीं जाना है

चकोर की भोंति आपने पिंडा से
कमी नहीं नाशन हटाना है
तन मन धन सब सौंप प्रभु को
राम प्रेम धर लाना है

84

4

April
Tuesday

1989

— छड़ के भूठे और सहरे
— पवाड़ सहारा सतगुरु दा
— टकरा मार जा द्वारे द्वोरे
— छड़ के द्वारा सतगुरु दा

— जद से देढ़ा क्लोलन लागे
— तेरे मन दी ज्योत ज्ञा जगे
— दो हाथ जोड़ गुरु दे जगे
— ला जपकारा सतगुरु द्वा

अपने सतगुरु जू कर राजी
जीत ले हारी होई बाजी
भूठे सजदे छड़ निमाजी
बन जा प्यारा सतगुरु दा

गुरु मुरत दा ध्यान लगा
मन दा मनका फेरी जा
सचे दिल जाटा रेव कमा
फिर देव व नजारा सतगुरु दा

जे तेनु प्रेम रवेडन का चाव
सिर धर तली गली मेरी आ
हसं २ जीवन प्रेम लुटा
बन बनजारा सतगुरु दा

85.

5

April
Wednesday

1989

भुमि के नाचो आज नाचो अज
गाओ रखुशी के गीत
आज तो मन की हार दुई है
और शुरू की गीत

अब तक था मन ने मुझे को सताया
मोह माया में था भटकाया
शुरू ने प्रेम से इसे समाया
निज स्वरूप का पता बताया
आपने जैसा मुझे बनाया,
चान्य शुरू की प्रीत

भारप्र लड़े मेरे जो शुरू ने अपनाया
गहरी नींद से मुझे उगाया
भव बंधन से मुझे छुड़ाया
सारे ज़हाँ का राजा बनाया
बिन मांगे सब कुछ के डाला
चान्य शुरू की प्रीत

भटक रहा था मैं जग की माया गें
अटक गया था इस काया में
अस्ति से रहा था धाया में
आपने स्वरूप में अब आघा में
साजे से मुझे जगा कर सुनाया
आत्मा का गीत

86.

6

April
Thursday

1989

तेरे हाथ में है जीवन बनाना
हीरा कोड़ी के लिए न गवाना

काल का नाम है तेरा काल
ये ही आज और यही है अब
शुरू वचनों को मन से लगाना
हीरा

दुनियाँ ज बदले बदल जाए हम
तभी हमको मिलेगा परमानन्द
पर विषयों से मन को हटाना

वयों सोचे तु कल की रे
रववर नहीं इक पल की रे
हर श्वास है तेरा बेगाना

आत्मा तो है सदा अजर अमर
जीना मरना इस देह का धर्म
सुनो ज ये सच्चा अफसाना

7

April
Friday

87

1989

तेरे जाग का आसरा मिल गया है
खुदा की कसम मुझ को खुदा मिल गया है

तेरे द्वर से घोड़ा सा सिर को भुजका के
बनाई है किस्मत तेरे पास आ के
मुझे तेरे पार का पता मिल गया है
खुदा की कसम गुफ़ को खुदा मिल गया है

वो कहते हैं मुश्किल बड़ा तेरा पाना
मैं कहती हूँ सभभा नहीं ये जगाना
मुश्किल जहीं तेरी भेदर का पाना
मुझे भेदरबान शाहन शाह मिल गया है

नज़म का है रवतरा न भौत का डर है
मुझ पे मेरे सतगुरु की नज़र है
जहो तहुँ रहता वो दुनियाँ आगर है
मुझे मेरे मालिक नी पूरी रवाकर है

है करतार तेरी छाफी भेदरबानी
तुने बनाई मेरी जिन्दगानी
मुझे शाही वा शाह रखुदानसीब मिल गया है
खुदा की कसम गुफ़ -

88

April
Saturday

1989

8

तू तो बेमिसाल है सतगुरु
तेरे जैसा कौन है जहान में
तुने जीवन मेरा पलट दिया
तेरे जैसा कौन है जहान में

तेरा चाँद तारों में नूर है
हर एक शाह में तेरा जहुर है
ये नज़र २ का है पासला
किसी द्विल से तू नहीं द्वर है
तेरा जलवा धारब हर जगह
तेरा जलवा सतगुरु हर जगह तेरा

हम अमीर हैं या गरीब हैं
तेरे द्वर से आके फकीर हैं
डुई जिसमे नज़रे करगे तेरी
वो जहो मैं पिर ना अवीर हैं
जिसे तू मिला उसे रख मिला
तेरें जैसा कौन है जहान में

9 Sunday

४९

१०

April त्रु अपने घर में जरूर आजा
Monday खुदी के बदले खुदा को पाएँ ४८९

क्यों इतने असर से परदे रहना
पादाई के गम त्रु इतने न सहना
त्रु द्वोड़ परदे राधार में आजा

क्यों दरोड़े घर के महल गढ़े ले
क्यों रवांक जगंल की दराने आकेले
त्रु बच छन्द से घर में आजा

नदी ने उयों ही खुदी मिटाई
बेनी रमगुन्ड मिटी दुआई
नदी के बदले बेनी जो दरया

खुदी के जांग को रगड़ के चोना
अभ्यास करना न गाकिल होना
खुदी गई पिर खुदा को पाना

यह नाम सप सब मिथ्या है सारा
बेना दुआ सब उसका पासरा
त्रु हस्ति भोति प्रिय में आजा

न जूरी निरणों पर मरता होना
न ठहर रस्ते मंजिल तो रवोना
त्रु असली अपने नूर में समाजी

त्रु सिर वो रवोदे और झींशा पाले
त्रु त्याग सब कुछ और राज पाले
त्रु बेन के रजा महल सजा जा

९०

१९८९

April
Tuesday

११

त्रु त्रु न रहे भैं भैं न रहे
हम राम में रेसे रम जाएँ
पानी में मिली जैसे नमक फली
हम राम में रेसे रम जाएँ

हम तेरे द्वारे आन पड़े
अब और बताऊ जाए कहाँ
रेसी दपावन्न करो भगवान मेरे
इस जन्म में तुम्ह से मिल जाएँ

कहीं कास कोप मीह में पासकर
हम छुट २ कर न मर जाएँ
रेसी दया करो दपावान मेरे
इस जन्म मरण से छुट जाएँ

अब तोई भी कर्म तज रवातानहीं
जब राम में हम सब मिल ही गए
तोई लोक नहीं परलोक नहीं
जब सतगुरु का ओदेश मिला

12

91

April
Wednesday

1989

०८०६

तैनू राम कवाके मैं कृष्ण कवा
त ता दीनों दा है पीर गुरु
तैनू इको ही भालक मेरे लखादा गरज
मे ही है अकसीर मेरे सतगुरु

श्री राम दे विचल भारी सी
पर आरवर घनघ औ चारी सी
झेये घनुष नहीं कोई वाण नहीं
तेरी अरव शामशीर मेरे सतगुरु

श्री कृष्ण की मुरली क्षणी सी
सारी रवलकात उठ २ भजदी सी
असां लिन मुरली ते लिन ताना
तेरे बने हा फकीर मेरे सतगुरु

की जाना की तू कीता रह
पल भर दे विचलुट लीता रह
मेरे प्राण दे नाल छपी
तेरी इक तस्वीर मेरे सतगुरु

92

1989

April
Thursday

13

तेरा दर्श पाने को जी चाहता है
खुदी को मिटाने को जी चाहता है

बहे राम जी की मुहब्बत का दरिया
मेरा इब जाने को जी चाहता है

हकीकात दिखादो हकीकात वाले
हकीकात को पाने को जी चाहता है

नहीं दुनियाँ की दीलत की चाह है मुझको
कि हर शय छुटाने की जी चाहता है

गमे जश्त दे कार जुदा करने वाले
तेरे तास आने को जी चाहता है

पिला दो मुझे जाम भर २ पिला दो
कि मस्ती में आने को जी चाहता है

न छुकराओ मेरी ये परियाद अब तुम
तुम्हीं में समानी की जी चाहता है

पुवारो मेरा नाम ले ले पुवारो
अगर पिर बुलाने की जी चाहता है

उठा दो दो मुख्य क्षे दो पद्धि उड़ा दो
एक गला भरो को जी चाहता

93

14

April
Friday

1989

तेरी मेहरबानी का है बोमा झूतना
जिसे मैं उठाने के काबिल नहीं हूँ
मैं आते गया हूँ मगर जानता हूँ
कि सर को भुलाने के काबिल नहीं हूँ

ये माना कि द्युता हो तुम कुलजहाँ के
भोली रौलाऊं कैसे तेरे द्वार आ के
जो पहले दिया है वो कुछ कम नहीं है
मैं उमारा उठाने के काबिल नहीं हूँ

तूने अता की मुझे जिन्दगानी
महिमा तेरी फिर भी मैंनें ना जानी
कर्जदार तेरी दया का मैं इतना
जिसे मैं चुकाने के काबिल नहीं हूँ

जमाने की चाहत में खुद को भुलाया
विघ्यों में फँस कर तुम की भुलाया
उनहगार हूँ मैं सजा गार झूतना
तुम्हे मुँह दिरगाने के काबिल नहीं हूँ

तमन्ना यही है कि सर को भुका हूँ
तेरा दीक तो झूकबार जी भर के पालू
सिवा दिल के टुकड़े के अ मेरे काता
जैं कुछ भी छढ़ाने के काबिल नहीं हूँ

94

1989

April
Saturday

15

तमाका तुम में होता है
तमाको मैं क्यों रोता है

जानना रूप है तेरा जानने से है वो मेरा
जाने और आने वालों में व्यर्थ क्यों जन्म रखता है

हुआ जब जानना अपना ना माला है ना है सपना
मिटा मैं मेरे का सपना गापिल क्यों नींद सोता है

कोई ताने में कहता है कोई काशी में जाने को
वह अपने आप को भूला दीवाना पाप धोता है

नहीं परलोक की आका जा है चाह कुछ बनने की
परमानन्द आपको पाकर पूर्ण भूमि में होता है

95

तुम शरणार्थ आया ठाकुर-

उतर गयो मेरे मन का संश्या
जब तेरा दृश्यनि पाया, ठाकुर
अनबोलत मेरी वृथा जानी
अपना नाम जपाया ६।

16 May
दुरब नारे सुख सहज समारू
आनन्द २ गाझा छाकुर
नाहै पताड़ कह लिन्ही जन आपने
झृ अन्धा द्वारा ते भाषा लकुर
काहूँ जानक जिस बन्धन को
निद्रत आन मिलाया १।

96

17

April
Monday

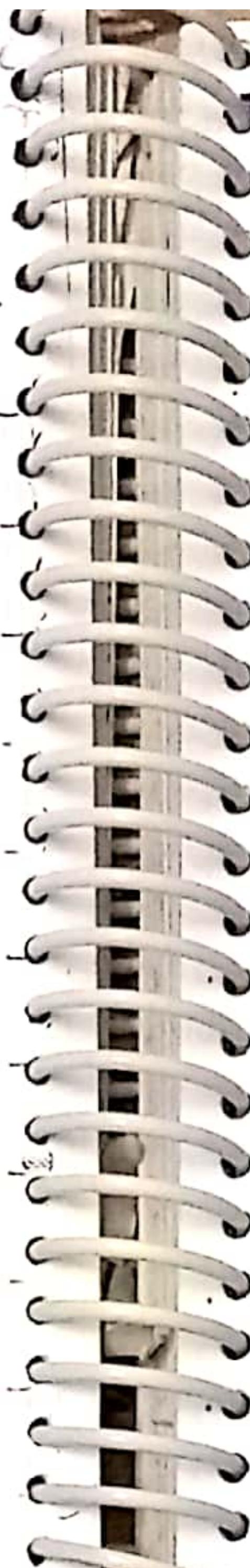
तुमको कैसे गाँझे प्रीतम्

- तू प्रीतम में तेरी दासी
- नित दर्शन को जैन प्यासी
- मन मन्दिर में तुम्ह को पूजा
- जीवन भेट-चढ़ाऊ रे प्रीतम्

- तू सब कुछ मैं कुछ भी न साजन
- तू मेरे जीवन का जीवन
- तू बन चाँद चक्कोरी बनू भै
- उड़ते उमर गवाँझे प्रीतम्

- तुमको पाके खुद को गवाँझे
- रबुद को गवां के तुम को पाया
- तू भी तू तन मैं भी तू लन
- तुम्ह मैं रघुद को सामाऊ रे प्रीतम्

1989



97 ॥

1989

April
Tuesday

18

तेरी महफिल के दीवाने नपौ में घूर होते हैं
वो इस दुनियाँ में रहने पर भी द्विल से घूर होते हैं

मजा आता है लोगों को
झधर से खुद वो मुड़ जाते
न तड़पन है न बैचनी
जो तेरे रंग में आते
जमाना पूँ कहे चाहे बड़े मरादूर होते हैं

समझते हैं कि सब जड़ावर
मिटी हैं चाहु का बंधन
वो बैठे हो या चलते हो
शिवोहम का सदा गुजान
नहीं गाया वो हृथकड़े से वो मजबूर होते हैं

हो डेरा आसंगा पर भाहे
जंगल में ल्सोरा हो
नहीं वो झुकता सुरज
अगावस का अन्धेरा हो
जिपर गिरती नजर उनकी रणाले जर होते हैं

पता नहीं देह का उनका
तो फिर क्या और से मतलब
वो तो कुट्टन्ध निश्चय है
अविदा के हैं सब करतब
वो खुद आन्ध्रिक वो खुद गान्धूक सदा भरपूर होते हैं

98

19

April
Wednesday

1989

तेरी आमु यूँ ही लीत जाएगी
सतगुरु की क्षण आजोड़ी

जहान जिसे दुकरारु
गले से लगा उसे अपना बनाए गुरुजी

देह भाव मिटाए आत्मा में ठिकारु
जहान स्तरण बनाए गुरुजी

गुरु काम से बचाए गुरु त्रोपा छुडाए
लोम जोह छुडाए गुरुजी

विषय गुरु ही छुडाए विकारो से बचाए
जन्म मरण मिटाए गुरुजी

गुरु शरण जो आए जगत मिथ्या दिरवाए
सपने से जगाए गुरुजी

19

April
Thursday

20

1989

तू ही सागर हैं तू ही विनारा
दूँठता हैं तू किस का सहारा

कभी तन में कभी मन में उलझा
तू सदा अपने दामन में उलझा
सब से जीता तू अपने से हारा

पाप क्या पुण्य क्या तू भूला दे
कर्म कर पाल की चिन्ता मिटा दे
यह परीक्षा ना होगी दुबारा

विष निकाले या अमृत निकाले
इब तेरे पाह अपनी तेरे पाले
तू ही शिव हैं तू ही शिव का दुलारा

उस का साधा है दर्णि उसी का
तेरे सीने में चढ़कन उसी की
तेरी ओरवो में उस का दूशारा

21

April
Friday

100

1989

तेरेचरण विच रहाँ मैं तेरेवज्ञा विच रहाँ
गुरुदेव सेसा वर दे यातार सेसा वर दे

से दोजहाँ दे मालिक, हर दिल दीजानया रा
कह्याँ ते कीती रहमत, मेरी वी गोली भरदे

इस रंग दे नझो नु पीँदा नसीब वाला
कह्य उठ गए ससजहाँ तो तकरार करदे कारदे

दुनिधाँ दी भीड़ अन्दर दामन तेरा ना छोड़
ब्रेवी मैं गिर ना जाँबा अंहकार करदे करदे

विसरे कदी ना मैन्ह तेरा श नूर नूरानी
अरंव वी कादी ना अपको दीयार करदे करदे

संतोष भिल गया है पाके रत्न नूरानी
इकारार हो गया है इन्कार करदे करदे

101

April
Saturday

22

1989

जो तेरी शरण मैं आ गया, भव से उसे छुड़ा
वैसा भी हो वो पातकी, पावन उसे बना दिया

दर २ भटकता है वही जो तेरी शरण आया नहीं
भूले से अगर गया कही रस्ता उसे बता दिया

माझ्य प्रबल उसी का है जीवन सफल उसी का है
त्याग सफल उसी का है जिसको तूने जगा दिया

जिसको भरोसा हो गया ब्रेड़ ही पार हो गया
अलमस्त पिर वो हो गया प्याला जिसे पिला दिया

तुम पतित के नाथ हो भक्त जनों के साथ हो
मुझ से अच्छम विमूढ़ को याता तूने अपना लिया

जिस की लगन हो आप से उद्धार होवे पाप से
छुटे वो जग के ताप से शीतल जिसे बना दिया

23 Sunday

24

April
Monday

102

1989

तेरा प्यार रँबीच कर लाया मोहे सावरियाँ तेरे द्वारे
तब अपना आप भुलाया जब दर्शन किस तुम्हेरे

तेरे द्वारे परजो आए वो रवाली कमी ना जाए
जो उसा भाव जगाए वो वैसा ही फल पाए
त करे कृपा की ध्याया और बिगड़े काज संवारे

कोई दृष्टानी तुम्हे दृष्टाये जानी भ्रम भेद मिटाए
कोई योगी योग लगाए कोई रोशन तुम्हे मनाए
तूने सब को गले लगाया ओ दुनियाँ के रखवारे

मेरी तुम संग प्रीत मुरारी झूठी सब दुनियाँ दारी
तेरी लीला सब से न्यारी कोई जाने हैं अधिकारी
तेरा भेद ना कोई पापा तरुणि मुनी घलन गरहारे

103

April
Tuesday

1989

25

तेरी लहरो में लहराते चले आए
गुरु जी तेरे दीवानो
तेरी महिमा को गाते चले आए
गुरु जी तेरे दीवानो

लगन की माला सच्ची भावना के मोती जी
अरिविंयो में चमके तेरे प्यार वाली ज्योति जी
इस ज्योति को-१ जलाते चले आए गुरु

तेरे चरणों वाली धूली जो मत्पे उतेलावेजी
जन्म मरण सब अपना मिटावेजी
तेरी महिमा को-२ गाते चले आए गुरु

जान गुरु दा करे सब ने मस्ताना जी
करे तेरे आगे अरदास निमाण जी
तेरे द्वारे असी-२ जदों चले आए गुरु

26

April
Wednesday

104

1989

तू सैलानी में सैलानी तू परदेशी में परदेशी
अगम देश से आस है हम सैर करन सुहानी

है हमारा देरवने से काम नहीं भाए इस उसका गम
सैलानी को सैर से मतलब तस्व होवे या विरानी

अपना है न पराया कोई अच्छा बुरा ना कोई जग में
हम हैं मुसाफिर पार्क रखे क्यूँ करे क्यूँ नाहूळ^{नादानी}

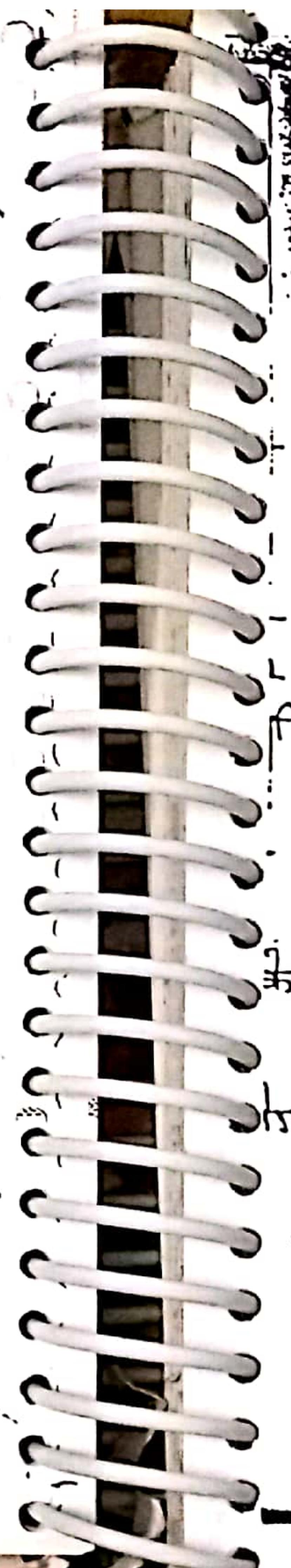
कादम १ पर काक महल है मुमल माया का घल बत्हे
राणे जैसा रमज से चलता जग में विरला कोई प्राणी

माया नगरी मन भरमाए ठितने मुसाफिर हैं भटकाए
देश भुला के परदेशों से दिलकश दुनियों हैं पानी

आरंव मिले पर खिल क्यूँ अटके भवंरे जैसा मन क्यूँ
रस का तोम पासात है हासिल होवे हेरानी भटके

दुनियों के गुलजार को देरवो गुलको देरवो रवार को
घार व नपरत से काम नया है दूरता
नजर चोहिए अकसानी

अपनी आदि जात पहचानो अपने से अपने लोजानो
सब से पढ़ है तेरा ऊँचा लाल है तूलासानी



105

1989 तुम्हारी भी जप २ हमारी अज्ञान
Thursday

न तुम होरे न हम होरे
शरण तेरी लेकर चला हूँ मैं जग में
जो हम होरे तो कैसे होरे

जाम तेरा लेता है हर कोई
पर दिल से न भजता है
जब दुख आए तो रोता है
बचा लो बचा लो
तो तुम उनसे पूछो अभी तक महापे
जो अब आए न पहले आए

लीला तेरी देरव के रोधा
जग का हर इक प्राणी है
अन्त में तेरी शरण को लेकर
अपनी हार ही मानी है
ओ देरवो दुनियों वालो
ऐसा न कोई होगा जग में
जो गिर कर उठाए दुरवों से लचाए
जो हम होरे तो कैसे होरे

आज तलक कोई न समझ
है जग में कब तक जिन्दा
फिर भी देरवो राम का भजना
ही समझी अपनी निन्दा
ओ जागो दुनियों वालो
अभी तक तुम नहीं जागे
तुम्हारा ही मालिक जब राजी है तुमसे
तो तुम पाओ तो सहजे पाओ

27

28

April
Friday

106

1989

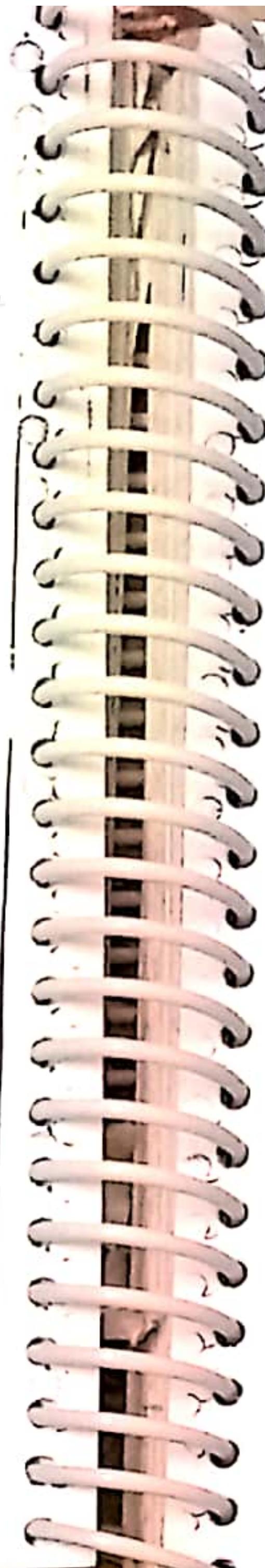
तेरे चरणों की धूल प्रभु चन्द्रन गुलांलक्ष्मी
जिसने लगाई मस्तक उसकी तकादीर बनी

चरण धूल से बढ़कर जग में
चीज कोई अनभोल नहीं
हर वस्तु का मोल है लेकिन
इस वस्तु का मोल नहीं
देवता तरसे इस धूली को
ये धूली कितनी पावन
जन्म के रोग मिटा दे
सुख से भर दे ये दामन

पार झुर्झ पत्थर की ऊहिल्या
चरण धूल के पाने से
निर्मल बन गया पम्पातर भी
शबरी के चरण बुझाने से
गुरु-चरणों की मर्हिमा गावे
मुग र से सब वेद पुराण
काले कोवें हस्स बन गए
चरण धूल में कर स्नान

जिन चरणों में गगां बहती
उन चरणों में मोष्म मिले
एङ्ग रहे जो चरण धूल में
ना डोले ना कभी हिले
लाखों पत्थर हीरे बन गए
प्यारे इन चरणों को पाम
पूर्ण सत्गुरु के चरणों में
पाते हैं वे चारों चाम

७



107

April
Saturday

1989

29

तुम्हेजो देवता है तो शगवत हो ही जाती है
मुहब्बत करने वाले से मुहब्बत हो ही जाती है

कोई भी दर तेरे से आज तक रवाली नहीं लौटा
तेरा जो नाम लेता है तो बरकत हो ही जाती है
मुहब्बत -

तू मां से भी ज्यादा है गुनाह को बकासने वाला
तेरे दर पेर जो आजाए तो रहमत हो ही जाती है

जिसे तुम दिल से चाहोगे तुम्हे वे खुद भी चाहेगा
कि अकसर चाहने वाले से चाहत हो ही जाती है

तेरे दर पे यकीनों सिद्धक से आता है जो बन्दा
ये देवता हैं तेरे दर से इनायत हो ही जाती है

बुरी महफिल में जत बैठो ये मैंने अजमाया है
विं इक दिन बैठने वाले की जिल्लत हो ही जाती है

इनायत माँगने वालों भरोसा ररव के आजाजो
कि इक दिन पीर आता है इनायत हो ही जाती है

30 Sunday,

108

May
Monday

1989

देरवीज्योति निराकार की इन नाजुक अस्विधों

आँखे अलग २ हैं सभी की मनके तो सबमें एक हैं
 हूँ हूँ अलग २ हैं सभी की सारकी तो सबमें एक हैं
 के अलक उसी के प्यार की इन नाजुक अस्विधोंमें

जीवन अलग २ हैं सभी का जीवन दाता एक हैं
 हूँ हूँ अलग २ हैं बनापा साथ में दिया विवेक हैं
 देरवी लीला अपरमपार की इन नाजुक अस्विधोंमें

एक ही सारकी चेतन हैं पर एक से हुआ अनेक हैं
 ब्रूँदं समर्द्दि सागर में पर सागर सगाढ़ा ब्रूँदं में
 देरवी रचना उस कालाकार की इन - - -

शान्ति की राह दिखाने वाला मेरा सत्तगुरु एक हैं
 जीवन जौका पार लगाने वाला मेरा मामी एक हैं
 देरवी महिमा उस दिलदार की इन - - -

जीव जगत थू भासत हैं पर स्वाक्षो बनाने वाला रहा हैं
 पलते अलग २ हैं प्राणी पालने वाला एक हैं
 देरवी अद्गुत छवि तेरे प्यार की इन नाजुक - - -

109

May
Tuesday

2

1989

देरवो सन्तो दिन सुहाना आ गया
 खुद खुदा रहमत बरसाने आ गयाब्रूँदते थे हम जिसे विराज में
 घट में ही हमको खुदा दिखला दियाधर्म कहते हैं किसे मजहब है बमा
 राज सुहानी बताने आ गयाजल रहे थे अहमता की आग में
 समता का अमृत पिलाने आ गयाइसकी वाजी में है सन्तो वो असर
 मुर्दा भी छवांसो वंगी पूँजी पा गया

3

May
Wednesday

दरबार में मेरे सतगुरु को
दुख दर्द भिटाए जाते हैं
जो तां आए इस जीवन से
इस दर पे हसाये जाते हैं

मे महफिल है दीवानों की
हर भक्त यहाँ मतवाला है
भर २ के चपले अमृत के
यहाँ रबुब पिलाए जाते हैं
क्यों डरते हैं आज वालों
इस दर पे सीस भुकाने से
इस दर पे तो स नादानों
सर भोट चढ़ाए जाते हैं

जिनको ठुकराया दुनियाँ ने
और ठोकर रवाकर गिरते हैं
इक बार जो दर पे आ जाए
वो सर पे चढ़ाए जाते हैं
चे मुक्ति का द्वारा है
भव बंधन यहाँ कट जाते हैं
भक्तों से भक्तों की बाहु पकड़
यहाँ पार लगाए जाते हैं

सिर घर के तली पे आजाओ
हसरत है जीते जी मरने की
भक्तों के जनाजे जित २ यहाँ पर
रबुब सजाए जाते हैं

110

1989

३

1989

4

May
Thursday

दे मस्त फकीरी वैष्णु गुफा को
शाहों की भी परवाह न हो
ना में किसी का शाह बनु
मेरा भी कोई शाह न हो

दुनियाँ खुश है ढोलत पाकर
मैं खुश हूँ त्रुमको पाकर
निर्धनता की ज्वालाओं से
दिल के भीतर कोई दाह न हो

पर दुख को मैं अपना दुख समझु
पर अपना दुख ना खला पाए
पर सुख को मैं अपना सुख समझु
पर अपने सुख की चाहन हो

चाहे घर २ में सत्कार मिले
चाहे दर २ पे तिरस्कार मिले
दोनों में ही मुस्कान रहे
दिल के भीतर कोई आह न हो

कई रंग बदले दूसरंजीवन में
पर भेद ना मन में आ पाए
मन विचरे आनन्द के बन में
पल भर भी कभी गुमराह न हो

5

May
Friday

1989

दिल में बैठा राम रमैया तुमको नजरन आए
पत्पर भूर्त आप बनाई उसको शीशा भुकाए

सुख की रवतिर जोड़ी माघा सुख तो हाथ ना आया
जिस कारण सुख उपजे मन में वह ठाकुर विस्तारा
तुम्हें कैसे कोई सगाहा तुम्हारे नजरन आए

जग की वस्तु धिर नहीं कोई पल न मिटती जाए
घट न जले यहु जीवन ज्योति वह सब में गुस्काए
तथों उससे जैयन चुराए

पत्पर की तूने नाव बनाई कैसे पार लगाए
अब तू अपना भाग्य जगाले जीवन सफाल ननाले
वो पल में पार लगाए

कैसे मन से करता है तू इस जग का व्यवहारा
द्वृक चित हो कर कभी ना सोचा कौन है करने वाला
क्यों वृष्णा गुर्व जाताए

पत्पर को तूने राम है जगा जीवत राम न जाना
रमाना राम सत दाट भीतर उसको नहीं पहचाना
तथों उससे जैयन चुराए

सतगुरु रारण पड़े बिन कोई भेद ना उसका पाया
कण न में कर आत्म दर्दनि रमा सभी हर राया
तू आनन्द में ही समाए

May
Saturday

6

1989

देरवा दुनिया का गृह गहमेला
तो मन को हटाना पड़ा

गर्भ के दुरवजों थे सहन हो चुके
बाला पन बेसमाफ में गुजर ही चुका
लेतरह से छिटे भार रखाने पे
आँखु लहाना पड़ा

मात चित भ्रात परिवार अपना लिया
मोह के जाल में फास चोरवा दिया
कुछ मरे कुछ गले कुछ जले
और विसी को बहाना पड़ा

पड़ गए प्रेमियों की अजल चाल में
उम्र रवोई वृद्धा ही लुरे रथाल में
तन के सुख रथन के सुख जनके सुरा
में सँगम को विताना पड़ा

इस तरह चोट पर चोट रखाते रहे
तड़पड़ते रहे कुछ भुलाते रहे
कर्म सन्चित जगे अम भेगे
तब शरण गुरु की आजा पड़ा

अब गर्जनेंगर्ज बुद्ध न संसार से
रवेल या रवेल डाला दरी गाल से
गुरु जो गहाड़ रत्न गर दिया
उब ना आना ना जाना पड़ा

8

114

May
Monday

1989

दादा लक्ष्मी आर जीवन साच लास
गमे जिन्दगी के अंधेरे में गुरु ने
दीर आत्मा के जलास जलाए

ख्वाब की आग में हम सुलगते रहे
जीना क्या चीज है हम तो मरते रहे
मगर रोते २ हस्ति आ गई हैं
शब्दातों में आ के जब गुरु गुस्कुराये

गुरु ने ज्ञान दिया जीवन दान दिया
तु ही दातार है द्यान किस का पारे
कर्मों की रेखा से प्रारन्प बनी है
कर्म धोगी बन के तू जीवन गुवित पाए

जैका बहने लगी रास्ते हँस दिस
प्रेम बहने लगा हर विसी के लिए
जीवन के रवेकट गुरु जी तुम्हीं हो
लगेगी अब पार नैया गुरु के साहोरे

115.

May
Tuesday

9

1989

दादा के मिलने से जीवन गिल गई
इक मुरझाई कली त्ती शिल गई

बगा चाहेगा कोई इस ससार में
दो जहाँ की आज खुशियाँ मिल गई

भूठी दुनियाँ अब न मुझको भाद हैं
जब से नजरे सतगुरु से मिल गई

दादा का जब ज्ञान इस मन ने सुना
चेम के रस में मैं हैसे रवो गई

दादा का इक जैसा सबसे प्यार था
दादा से अपनी अमानत गिल गई

तन मन धन जब सतगुरु को भेट किया
आत्मा में आज वृती टिक गई

दादा की कुबानी सब को भाद हैं
उसमें जीवन की सुगन्धि फैल गई

10

116

May
Wednesday

1989

दुनिया में आकेबन्देया भूला तू अपनाकरार है
तेरे लिए भगवान ने कौसी रची बहार है

वायदा गर्भ में था किया भूलूँ तुम्हको न हरि
पांस के मोह जाल में भूला तू अपना करार है

जिस हरि ने जन्म दिया उसका कभी नानामतिया
जिससे प्रीतलगा रहे कोई न मददगार है

माचा ने तुम्हको लावरे अपना दीवाना कर दिया।
महित प्राहृती छोड़ कर विघ्नो से करता रायर है

लारकों हरि उपकार किस भन्तों के लेडे पार किए
सच्चे मन से जो धाद करे होता को मददगार है

116

117

May
Thursday

11

1989

लम्जुरे मुहूकत लंस है घटी
हस्ती को मिटाना पड़ता है

जरा गफलत हुई था नजरे गुर्वी
चहूँ और सभी ने घेर लिया
शतगुरु का दीपक मन मन्दिर में
हर वक्त जलाना पड़ता है

भगवान का पाना आसान है
शतगुरु का मिलना गुर्खिल है
सतगुरु को पाने के लिए
सिर गेट चढ़ाना पड़ता है

मन्दिर में गया भस्त्रिय में गया
जगले भें भी उसका पता न निला
जब समाज आई तो चे सजाजा
सतगुरु को रिमाना पड़ता है

जब नजरे परम हो सतगुरु की
तो मंजिल भी कोई दूर नहीं
वो नजरे परम राने के लिए
हस्ती को मिटाना पड़ता है

12

May
Friday

दिल द्वक मन्दिर है
आनन्द अन्दर है
प्रेम बिना प्रभु नहीं मिलता
प्रेम ही सब कुछ है

जिसने प्रभु से लगान लगाई
उसने नैया पार लगाई
वजा होती है नाम खुमारी
लो हो जानत है

हर किसी की चाह यही है
सुख में जीतन कैसे बिताऊँ
उसको राह मिल जाती है
जो अभिलाषी है

दिल तो दिलतर की जगह है
जात ये कोई क्यों भूलता है
जो न बसाए दिलवर को
वो जीवन रखेता है
वोर उसी को सब कहेते हैं
जो अपने दोरों पे रखेहै
तूफानों से वो नहीं डरते
जी दीवाने हैं

118

1989

1989

119

May
Saturday

13

1989

दादा गुरु भगवान का उपकार हुआ है
जिससे यहाँ हम सब का ही उद्धार हुआ है

खुद जी के जिसने हम को भी जीना है सिखापा
ऐसा महान द्वक वह कलाकार हुआ है

क्या रवेजते भ० को दादा ने बताया
द्वन्द्वान ही भ० का अवतार हुआ है

मैं और नहीं हूँ और तू और नहीं है
परमात्मा से आत्मा का प्यार हुआ है

नहीं दूसरा कोई यहाँ हम छैतको छोड़ो
अछैत में ही प्रेम का विस्तार हुआ है
कहते ये लोग कुछ तो चमत्कार दिखाओ
तुम स्वयं है भ० चमत्कार हुआ है

गीता के हर शब्द का है अर्थ बताया
हर शब्द के हर अर्थ का रहस्य बताया
हर शब्द आज शान का भण्डार हुआ है
दादा सदा कहते ये इच्छा मात्र अविद्या
इच्छा नहीं रही तो निराकार हुआ है

दादा का ये पौधा जिसे भगवान ने सींचा
सद्ब्जान का इतना लड़ा करवाये हुआ है
प्राज्ञान का इतना लड़ा दरबार हुआ है

नार्ता क्यों बनू करके मैं दादा की बड़ाई
अपने ही आप उनका ये सत्कार हुआ है
उनका नहीं ये बोना का सत्कार हुआ है
इस वास्ते उन्हीं को नमस्कार हुआ है

15

May
Monday

190

1989

न पूछो ये गुफ से मैं पा देरवता हूँ
मैं तरी अजर में खुदा देरवता हूँ

तरी मुस्कुराहट मेरी जिन्दगी है
यही जिन्दगी खुशनुगा देरवता हूँ

समझता हूँ खुद को गुनहगार लेकिन
तुम्हीं सक को पारसा देरवता हूँ

भले और बुरे की हो पहचान कैसे
मैं हर सक को सकसा देरवता हूँ

खुशी और झड़ी सब बराबर हैं गुमानों
मैं सब मैं ही तेरी रजा देरवता हूँ

किसी से भी नफरत करूँ किस तरह मैं
मैं दौरों को भी आशाना देरवता हूँ

कहूँ क्या कहूँ पर है तेरा ठिकाना
मैं हर शप में त्रुम्भ को छुपा देरवता हूँ

न दो बुत परस्ती का इत्याम गुमानों
मैं हर बुत मैं बुरे खुदा देरवता हूँ

बिना जात तेरी यह सब कुछ है पानी
तुम्हीं को सदा सकसा देरवता हूँ

191

May
Tuesday

1989

16

जा मैं मन ही रहा जा मैं तन ही रहा
सतगुर सिलने से भगड़ा रवत्म हो गया

कुटम्ब वालों क्यों भगड़ा पैलाते हो
जाल छन्द का अब तो रवता हो गया

नहीं मात पिता सुत धारा मिले
रवेल जादू का अब तो रवत्म हो गया

अगर तुम्ह भी बनना हो तो घोड़ी बनो
पिर बनना बनाना रवत्म हो गया

कण घोग मिलाए हरि चुम्ज स्स
भीतर बाहर हरि ही हरि हो गया

मैंनें गर्भ में बाढ़े किरण राम से
सतगुर की कृपा से पूरे हो गए

प्यारे सतगुर की भीहिमा मैं कैसे करूँ
दास होना या अब तो बही हो गया

17

May
Wednesday

जा कर अब तु मेरा मेरा
टुटेगा अमिमान जो तेरा

दिल में प्रभु का र्यार नहीं है
जीवन में कुछ सार नहीं है
रसि कर्म बेकार हो तेरा

यह जग है इक भूठ सपना
पिर क्यों इसको माना अपना
द्वोड़ने पर पड़ेगा रोना

यह चाज पाप से कमाया तूने
यह समाज जो बनाया तूने
सब है प्रभु की अमानत का देना

इस जग की तु प्रीत द्वोड़ दे
सत्त्वरु आगे शीश चढ़ा दे
काट के जन्म सरण का चेरा

1989

122

1989

123 : १

May
Thursday

18

नाम जपन क्यों द्वोड़ दिया रे

झूठे जग में जी भरमा कर
असल वेतन क्यों द्वोड़ दिया रे

कोटी को तो खुब संभाला
लाल रतन क्यों द्वोड़ दिया रे

खालस इक भगवान भरोसे
तन मन धन क्यों न द्वोड़ दिया रे

काम ना द्वोड़ा क्षोध ना द्वोड़ा
सत्य वचन क्यों द्वोड़ दिया रे

124

नारायण जिसके हृष्य के मांहि
सो कुछ कर्म करे न करे

सूर्भ का जब प्रकाश होवत है
तब दीपक ज्योत जले न जले

नाव मिली जिसको जल भीतर
सो बाहों से नीर तेरे न तेरे

पारस मणि जिसके घट भीतर
सो धन संचय करे न करे

दासानन्द को जो जन जान्यो
सो काशी जाय सरे न सरे

19

125

May
Friday

1989

न जाना राम कैसा रे योगी रे चोगी
रहत अतीत सर्व रस भोगी

दस मास दूक मन्दिर रन्निया
एक खम्बा और दस धरवाजे
उसमें एक योगी जो रहता
करता सकाल पासारा रे राम

आप ही योगी आप ही योगी
आप गुरु और बेला रे राम
आप सुन्ने और आप सुनावे
हैं तिर नीलों ओकला रे राम

जानो ही मार्ग भर्सग कर डालो
गन का गुड़ गुड़ाओ रे राम
मन है सावार पवन के ऊपर
आसन कबीर लगापा रे राम

126

May
Saturday

20

1989

न रख किंसी नाल बैर करले प्रालयार
रौनका बेरवी जा प्राला नु हृष्ट ना ला

रंग बिरणे प्राल है सारे सब रगों में चोरवा
मुर्क लई मुसीबत भारी समझ दार है ज्ञास्वा
सवेरे जीत छाम नु हार तैनु की परवाह
प्राला नु

भूठी दुनियां देरव के ऐत्ये दिल नाला परदेशी
इस दुनियां दी तोता दुष्टि दिल दुकडे बरदेसी
ऐत्ये दो पिना दा जीना ऐत्ये घुट गमादा पीना
बेला हसन दा प्राला नु

जो इस दुनियां वल भजका
दुनियों जरा ना परवाह न रदी
जो इसका दासन छोडे दुनियां अगे पीढ़े पिरदी
वथा ले तु मजित वल दैर करले प्रालवारी
रौनका - - प्राला नु - -

22

May
Monday

127

1989

न हर भूलों न जग छोड़े करम कर जिन्दगी में
रहो दुनियाँ में मूँ जैसे कमल रहता है पानी में

दुई जब दूर हो जाए नजर आते नजारे हैं
हैं सब जहान नूर भूँ का उसके रवेलन्यारे हैं
तू उसके रंग में रंग जा कि जैसे दूध पानी में

तुम तो इक सहलानी हो थे जगा तेरी अमानत है
जो उसमें उलझ तू बैठा समझ तेरी क्यामत है
समय है उब समझ तू जा थे माया आजीजानी है

ज़ुलूनी शरण में आकर मिटाले कृष्ण अपना तू
सरूप अपने का अनुभव कर जगत को समझ समान दू
थे जलवा देख अपना तू न फ़स इस दुनिया
फानी में

23

May
Tuesday

128

1989

21

नैना विच वस गई तेरी तस्वीर वे
तेरे जेया दृष्टालु दिसदा नहीं धों पीर वे

जग विच रहे पर नजर नू आवेत्व
जग विच रह के ससार चलावे त्व
जेडा तेनू देरवे ओढ़ी ऊची तकदीर वे

संद्वा दी धाली ले के आरती सजाइये
पूजा जेई जिन्दड़ी दी ज्योत जलाइये (जलाइये)
भन्नि दे रंग विच रंग दे शरीर वे

दिल दी पुकार विच त्वैर्ह पिया बोलदा
कना विच प्पार वाला रस पिया धोलदा
तेनू पिया टोलदा स अखियां दा नीर वे

रखे भावे मारे तेरी रजा विच चलना
तेरा कर दृढ़ दृष्टालु केडा दर मिलना
फिर क्यों पाईमा विंद्वोड़े दी लकड़िर वे

24

129

May
Wednesday

1989

निंगुण रंगी चदरिया रे कोई ओटे सांत सुजान रे

कोई १ विरला यत्न से पाए
या चुनरी पिय के मन भाए
कितने ओढ़ भए वैराणी कितने भए गस्तान

नाम की तार से लुनी चदरिया
प्रेम भक्ति से रंगी चदरिया
सतगुर कृपा करे तो पावे, यह अमोत्क दान

पोथी पठ २ नैन शब्द
सतगुरु नाथ शरणी नहीं आवे
हरि नारायण निंगुण संगुण सबीमें सगाया

25

130

May
Thursday

1989

-प्रेमी कृष्ण संग प्रीत लगाना
-स्वेसा न हो धीरे पडे पद्धताना

-मानुष तन है छुर्म भाई
-याहे अगर तू अपनी भताई
-विषय विकारों से मन बो हटाना

-भाग्य बडे जो सतगुरु पाया
-सार शब्द गुरु ने दर्शाया
जप हर दम कही भूल ज जाना

प्रेमी श्वास न रवाली जास
सुरत जुड़े तो मुक्ति पाए
निज चाम में होवे तेरा ठिकाना

सार शब्द बिन सुरत है भटके
माया के जंगल में आरके
सतगुरु नहीं किसी ने छुड़ाना

26

May
Friday

131

1989

प्रेस नाम दा उड़न खटोला रब दी सैर करांदा ए
जित्ये गम ना चिन्ता कोई नेगमपुर ले जांदा ए

इस नगरी दी रीत निराली ना जन्मा ना मरना ए
देस किनारे जो लंग जावे ना झुलना ना तरना ए
देस नगरी वाला जेहडा धम दे हृषि ना आंदा ए

ऐत्ये अमृत भरिया नदियों पाल पूल भेरे बगीचे ने
भेरे दादा ने अपनी हृषी प्रेस दे लुटे सीचे ने
तही हवा ना लंगन देको हर पूल गुरकांदा ए

जेडा राम दे छोरे आंदा वस्तु अनोखी पांदा ए
तूक करना सिख लिया ए भैं तो जान फुड़ाई ए
जेडा राम दा सिगरण करदा राम स्प हो जांदा ए

132

May
Saturday

27

1989

पूरा सतगुरु गिंला दिया सरको भुजा
जिसे जग ढूँढ़ता है वो मिल गया

पाठ पूजा भी की छोरे मन्दिर गए
धोग अ-यास से मुझे जिल न सका
चोरी पुस्तक पढ़ी केरी माला बड़ुत
पर मुरमाया दिल मेरा खिल न सका
सशाय दूर हुए-२ मिल गया है हीरे मुझको

कर दुर्जनान तीर्थ को बम्प जाँड़ भैं
दूर की धोड़ी मिली मुझे हरि मिल गया
पुर्वजन्म के कर्म रवुले थे यहा
धर बैठे मुझे सतगुरु मिल गया
नपरत बीत गई-२ दिल भैं प्यार आ गया

कमी राम लने गुरुं नानक बने
कमी बासुनी वाला बन कर आ गया
दुनियों निन्दा हमेशा ही करती रहे
पर भक्तों के मन को सदा भा गया
भैं हुं प्रभी तो त है मुरार मेरा

28 Sunday

133

29

May
Monday

1989

पियो रे राम रस है कोई र्यासा
पियो रे राम रस

जिस दिल में प्रभु खेड़ा नहीं है
वो दिल तो है सुना सुना
प्रेम बिना पिल रहे उत्तरा

सतगुरु मेरा खेम का शागर
कुएँ जे भरदी दिल की जागर
त भी करते पूरी आशा

जन्मों की है र्यास सभी को
पिर भी है अभिमान सभी को
प्रेम बिना अभिमान न जाता

खेम तो है रुद्ध ही परमात्मा
हर इन दिल में है जो आत्मा
प्रेम ऐ छुटे देहप्राप्ता

134

May
Tuesday

30

1989

- प्रभु तेरी भाद्र आती है
- मेरे दिल को सड़काती है
- तो किर मैं क्या करूँ
- कोई दीवाना कहता है वगई गस्ताना कहत है
तो किर
- अजब मेरी घाती है ये दुनियाँ भूल जाती है
- ना जाने क्या हो जाता है कलेजा मुहँको आता है
- प्रभु को दिन कब आएंगे तेरे जब दर्शन पाएंगे
वस इतना ही कहूँ
- प्रभु जी कृता कर दीजों शरण में अपनी लीजों
वस इतना ही कहूँ

31

May
Wednesdayपाप किर जा या पुण्य किरजा
के सला थे अपना तु आप किरजाजो भी करता है तेरी बुराई
उस बुराई में तेरी भलाई
बरदास किर जाजग में करते तु सब से भलाई
इस भलाई में तेरी कागाई
विश्वास किर जामहापुरुषों ने ज्ञान का रस्ता दिरवाया
सच्चे प्रभु का दर्शन पाया
आद किए जाविष का राता पिया भीरा बाई
उसकी गिरधर ने लाज लचाई
विश्वास किर जा

135

1989

136

June
Thursday

1

1989

प्यासा बोई मुसफिर भूले से दर पे आइया
बरसा है बन के बायल तेरी रहगतो का साधारहगो कर्ग का कैसे करें गुक्किया अदा मैं
जिस ने तुमो पुकारा वही दोड़ के तु आया
चीरो के पीर भुर्खिद भुर्खिद कगाल मेरे
कैसे तुमें भुलाऊं भुददत के बाद पायातेरे सामने से उठ कर मैं किस तरह सेजाँ
तुम्ह सा हसीन दिलबर अब तक नजर न पायाविरान हो या बस्ती सहरा हो या चगन हो
हर गुल में तेरी खुशबू तेरा ही नूर समायाजब भी मेरा सफीना तुम्हाँ से डामगाया
तूने दिया सहरा आगे ही बढ़ता आयापरवर दिगार तुम हो रहबर हो रहनुगा हो
ठुकरा दिया जहाँ ने तुमने गले लगायाफौलाने हाथ जाँ किस दर पे तु बता दे
तेरे से बढ़ के गुमाँ को दर दूसरा ना भाया

2

June
Friday

परम प्रभु आजो ही उर पायो
मुगो २ की भिटी कल्पना रातगुरु भेद बतायो

जैसे कंवरि कंडमणि भूषण जाने वाही गतोयो
कौन सरकी ने आए बताया मनका भ्रा गिरायो

जैसे जिया सपने सुख रहोजो जान के जी उकलायो
जाग पड़ी पलंगा पर पायो न जाही गयो न आयो

जैसे मृग नामि बसे कस्तुरी तज २ टुंडंज जायो
उलटी सुगन्धि नामि कोली नहीं मन ही मन
साचायो

कहत कबीर भयो आनन्दित यो गुँगा गुड खण्डो
ताको साधा ताहे कुद्दु कोरो मन ही मन
गुस्कायो

137-३

का लेना हरि नाम बा आला, हरि शोरनिर जोरो - २

गुम्हें - गुम्हें - २.

- महूर वाली दीनी गुरु ने अफल कमा तिन बोरा
ओ चुरु नो दण्डन बोरो, रोरे बोरा बोरा -

गुरु ही शारीर गुरु ही गर्वीर। गुरु ही शुक्र। गोदम्परी
शुक्र गुरु नो नन भोजरा लो, तो रोरा -

गोरु ही तिंदर गुरु ही बोरो, ही रोरो, दूरोरो
शुक्र उपरी दूरोरो बना लो, रोरो, रोरो बोरो -

शरीर नरी दीना गुरु, गोरो गुरु नो शुल बोरा
तो नन बोरा गुरु, गोरो गुरु नो बोरा -

137

1989



138

1989

June
Saturday

3

प्रभु हम पे कृपा करना प्रभु हम पे दया
वैकुण्ठ तो यही है हृषा गे रहा करना

गुंजों मे राग बन कार तीणा की तार बन के
प्रगटोगे नाच मेरे हृष्य मे पार बन के
हर रागनी की चुन पर स्वर बन के उठाकरना

नाचिंगे मोर बन के हग रघान तेरे द्वारे
वनश्चाम द्वाये रहना बन कार मैथ कारे
अमृत की चार बन के पासे पे द्या कला

तेरे विद्योग मे प्रभु दिन रात उदासी है
अपनी शरण मे लै लो ऐ नाच वृजतासी
सोहम शत्रु बन के तुम बान मे रगा करना

43

5

139

June
Monday

1989

पूर्ण माहीं रहना साप्तो
यही गुरु का कहना

पूर्ण जल स्वंघ प्रकाशी
जाटे जाम रूप की पांसी
सहज समाधि धरना
साप्तो यही गुरु का कहना

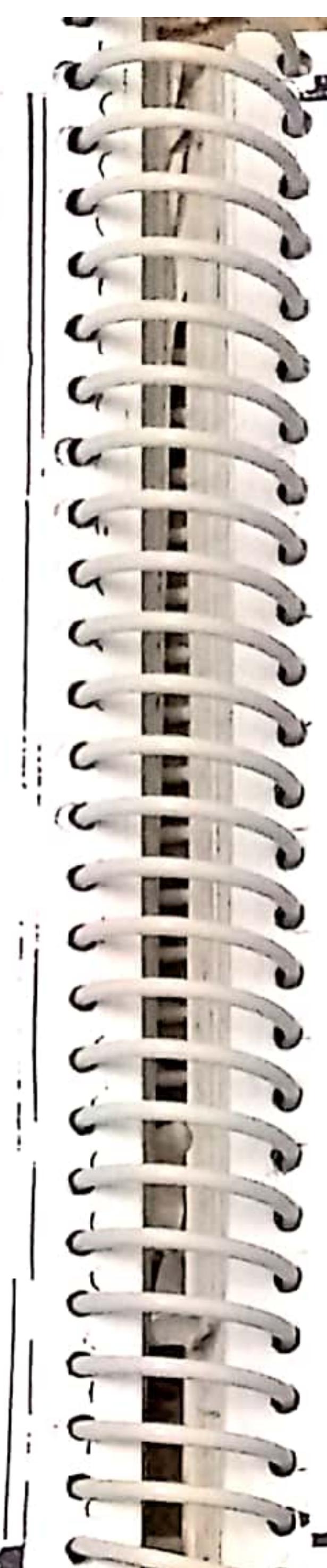
पूर्ण में परिदृष्टि नज़ारे
न कुछ ग्रहण न कर त्यागे
नहीं करना नहीं भरना साप्तो

पूर्ण में नहीं लोकलज है
पूर्ण में नहीं जगत जात है
नहीं डुबा नहीं तरना साप्तो

पूर्ण में नहीं बन्ध मोद है
पूर्ण में नहीं तांच कोष है
नहीं जीना नहीं मरना

पूर्ण तरमानन्द को पाया
आदि अन्त का भेद मिटाया
नहीं जीव नहीं जरना
साप्तो छहीं गुरु का कहना

0



140

June
Tuesday

6

1989

पल पल सन्त त्रुभे सम्भार
ओं हीरा जान्म श्वार
समय क्षेत्रों रहो रहा है - 2

ओ भोले प्राणियाँ चार दिनों की तेरी जिन्दगी
कुछ तो कमाई करले कर मालिक की तु बन्दगी
त्यार से सन्त त्रुभे सम्भार ज्ञान की राह दिखाए
— समय —

कर ले ओ भोले प्राणी कल्पनानी की तु संगते
आत्म निश्चय करले, देषड तु माणा की रंगते
तुलनानी था ये परमाना, क्षेत्र तु सोयानादान

समय अनगोल पाया, विषयों में ना रोल दे,
मिलेगा सच्चा सुख अपने में, प्रभु को तु रोल ले
आत्म ज्ञान को पाके बन्दे जीवन शुनित कापाले

0

7

June
Wednesdayप्रेम द्याला गुरुदिया रे साथो
मरत मगन कर दिया रे साथो

प्रेम गठी का सतगुर साकी
 सिर साटे हुम लिया
 पवित्र प्रेम विसर गई नाशा
 दिल दर्पण कर दिया

आठों पहर रहूँ गतवाला
 लाली का रंग लिया
 चाटी खुमारी उतेरे नाहीं
 सदा मगन रहूँ निया

प्रेम की माहिमा मुख कही जाए
 वट उजियाला किया
 जागी ज्योत राम रंग लाए
 भूल भारम भिट जाए

प्रेम कला स्तों दे परवाया
 जुन्म नरण दुख गाया
 कहे प्रेमी गिटी जल ग़जता
 सदा अमर झुग जिया

141

1989

1989

142

June
Thursday

8

1989

प्यार तेरा अमृत रस जैसा
 द्रष्टि तेरी गगाजल है
 गहरा तेरा सागर से बंद कर
 कारुण का तेरा बादल है

भूल गया मैं सारे जग को
 प्यार किया तुमने इतना
 नीद रुक्ली तो मैंने समझा
 सपना है या है अपना
 मैं जा जग में कर के दिखाया
 जब तक जग जगते रहना
 पास मेरे तेरे हरदम इतना
 जैसे नयन का काजल है

चू जा सके उर्ध्वी तूफान
 आचंल तेरे प्यार का
 रूप नद्दीले मैंने देखा
 माघा के अन्धकार का
 हाथ पकड़ कर तुमने दिखाया
 जो मेरा असली चर है
 तेरी गहरे से मैंने समझा
 भोग नहीं पर दलदल है

143

9

June
Friday

1989

पाया मैंने है भगवान्
सत्संग की है महिमा महान्
आन मिले गुम्फ से भगवान्
पाया मैंने अनुभव शान्

ओहरी मिल गया एक निराला
वांच से घ्रांट हीरा कर डाला
परालम से छुई पहचान
पाया मैंने अनुभव शान्

कर्म ज काया मोहु न माया
कर्त्तापन का अम मिटाया
छूट गया देह का अमिगम
पाया

अनुभव की है छछि सारी
दृष्णियाँ देखी हारी हारी
हैं जो टीकी और सुनसान
पाया

बहती अविरल शान की धारा
धूल गया मेरा कलिमत सारा
दूर नहीं है अब निर्वाण
पाया मैंने अनुभव शान

144

June
Saturday

10

1989

पानी में मीन प्पासी
मोहे सुन २ आवत हासी

आत्म शान बिना न र भटके
कोई मधुरा कोई काकी
जैसे मृग नामि कस्तुरी
वन २ फिरत उदासी

जल विच कमल कामल किय
तां पर भवंर उदासी कालिया
सो मन वचन विलोक भयो सब
यति २ सन्धासी

जाको ध्यान घेरे मुनिहरी हर
मुनिजन सहज उदासी
सो तेरे पर माही विराजे
परम पुरुष अविनाशी

है हाजिर तोहे दूर दिरवाके
दूर की बात निराकी
काहे कबीर सुनो भई साथो
गुरु बिन अम न जासी

०

12

June
Monday

145

1989

पीती पीती अज जैं तीती रु
 नाम काटोरी भर २ के अज पीती रु
 मेरे इधाम दीमा शाना देरनो
 अज घूमाजग किच पाई
 उन्हें तरे लरना पाए
 निट गृह्णा कर्मा दीया बद्धो
 ऐद्यो ओदी नीति रु
 इस इधाम कोलो सदके जावाँ
 जिन जाम पिलागा गैनु
 इस मस्ती दे विच गृह्णा
 जिन मस्ता बनाया गैनु
 इधाम संग तीती रु

नादाम वोई अ मगांदा
 भर २ के पिलार जांदा
 निष्काम वचन अ सुना के
 सब जू रु मस्त बनादा
 अजब रु रीति रु

मैं रब नू देरनन वाली
 रह अँख गुसा ते तीती
 पिर चारणा दे विच देरनो
 सारी दुनिया कानु कीती
 इधाम संग तीती रु

मैं सदा चारणा विच रहूंदा
 मैं मौत कोलो नहीं डरदा
 रु जाम चाली री के
 सदा हसंदा ते खुश रहूंदा
 ख्रेगी दी रेहो पुरी रु

1

1989

146

111

June
Tuesday

13

एपरे सतगुरु ने हमको
 बेड़े प्पार से बनाया
 हर जब से हम गुरुके
 भिटा भेद सब हमारा

भूठे जग के रवेल देरवे
 तेवी गृही जग की गाया
 मिले जब से हम गुरु से
 उड़ा सच से अपना जाता

इस जहाँ में जब से आए
 चले मन के ही सहारे
 एपरे सतगुरु ने हमको
 सच का दिया सहारा

तेरी शरण जो भी आया
 उसने हैं राज पाया
 तेरी दिव्य नजर ने हमको
 सच्चा नद्यम है दिव्यवाया

इस शान में जो भी उगाया
 उसने है खुद भूलाया
 खुद को भुल के उसने
 खुद में खुदा को पाया

सतगुरु के पास आ के
 दिले हाल जल सुनाया
 गिटे जेद सब जिया के
 हुए रुक उनको पाके

14

June
Wednesday

47

1989

प्रभु प्पारे से जिसका सम्बन्ध है
उसको हर दम आनन्द ही आनन्द है।

भूठी दुनियाँ से करके किनारा
लेकर सच्चे प्रभु का सहारा
जो उसकी रजा में रजा-मन्द है
उसको हर दम आनन्द ही आनन्द है।

जिसकी कथनी में अमृत भी घार है
जिसकी करनी में ज्ञान की महक है
प्रेम नरमी से जिसका सम्बन्ध है

निराकार चुगली ना जिसको भास
बुरी संगत की रगत ना आस
सत्संग ही जिसको पसन्द है।

दोन दुरियों के दुख जो भिटाए
नन के सेवक भला सबका चाहे
स्वारधार ही जिसको पसन्द है।



1989

June
Thursday

48

15

फिकर से वो ही खाली होता है
जो सदा अन्तर मुख में रहता है
वो ही ये ज्ञान अमल में लाता है
जो ज्ञान सत्यरूप में रखता है।

जिसके दिल में प्रभु की धार नहीं
वो अप्सूरा रहता है
सारी रक्षियाँ उसे मिले भी अगर
पिर भी वो प्पासा रहता है
उसकी सांसे व्यर्थ ही जाती है
जो ये अनमोल समय गंवाता है।

एक कदम जो भी आगे बढ़ता है
सौ कदम प्रभु आगे आता है
हर जगह वो बसा ही रहता है
अपने भगतों पे नजर रखता है
निज आनन्द को वो ही पाता है
सच की तमन्ना जो ले के आता है।

कितनी दिवारे आगे आती है
जो कोई सच की राह पे चलता है
च्छाहे दुनियाँ उसे छिरा कुछ समझे भी दे
वो तो गिर कुर भी संभल जाता है
च्छाहे दुनियाँ उसे ना कुछ समझे
वो तो लारकों में एक होता है।

16

149

June
Friday

1989

फूलों से दोस्ती है काटो से धारी है
कैसे मजे की रायरे जिन्दगी हमारी है

न समझा खुशी को खुशी भग को न गम
मौत के भी नाम से ना व्यबराये हुग
विश्वती सदा ही मनपार जें उतारी है

चाहे जमीन हो था हो आसगान
ठोकार में अपनी है दोनों गहना
जितनी गुजारी हसी शाज से गुजारी है

अपनी रवताऊ पर भी नाज है
खुदा सारी दुनिया से अदाज है
पी भी नहीं है पिर भी खुमारी है

149

150

June
Saturday

17

1989

बहु ज्ञान में शक्ति भरी
ज्ञान सुन ते घड़ी दे घड़ी

उस इन्सा का जीना भी क्या
जिसमें ज्ञान की ज्योति न हो
उस जीवन का मतलब भी क्या
जिसमें प्यार की लोली न हो
है प्रेम में शक्ति बड़ी ज्ञान

आज से अपना वायदा रहा
गुरु शरण में रहेंगे सदा
लारव भौतिक सुरव हो तो क्या
गुरु वचनों से बढ़ कर जहीं
है सतहुरु की महिमा लड़ी

लारव माया की उलंगने लड़ी
गुरु वचनों से बढ़ कर जहीं
माया डोरे डाले भी तो क्या
गुरु वचनों से रार हो जा
है सतसंग की महिमा लड़ी

उस इन्सा का जीना भी क्या
जो सब के लिए न जीया
उसका मरना भी गरना है त्या
जो जीते जी जर न जाया
जौत सामने है रतड़ी

19

151

June
Mondayबगँला अजब बना दरवेश
जिसमें नारायण बोले

इस बगँले के दूसरे दरवाजे
तीच पवन का रवभा रे
आवर्त जावत लखेन कोई
देखा जड़ा अराम्भा रे

पाँच तत्व का लगँला बनाया
तीन गुणों का गारा रे
जिस कारीगर बगँला बनाया
सो कारीगर न्यारा रे

इस लगँले में कौन रहेगा
कहा विष्णु महेश्वा रे
इस बगँले का पार न पाया
दूरे फिर दरवेशा रे

सूरदस्म प्रभु बगँला बनाया
जुट्ठरत तो बलिहारी रे
करि कृष्ण जोहे दृश्नि दीजे-
जो हूँ शरण तिहारी रे

1989

152

1989

June
Tuesday

20

गिना राम दे तू किसी नाल प्यारन
ओ मना धाद रखवी
सोना छड़ के तू मिट्ठी दा व्यापार ना करी
ओ मना धाद रखवी

कोई मन्दा लोल बोले अगो बोली जा हां बोली जा
देरवी बन्दा हो के गन्दगी पारोली ना हां पारोली ना
कौड़ी तकदीर नाल तकरार जा करी ओ मना --

जे तू जेडे जाना चाहे झठ दे हां झठ दे
पंजा वैरीयो नु जेडे वी जा आन दे हां जा आन ने
कास कोध लोभ सोह ते अहंकार जा करी ओ --

गेडे भुड़ के चौशसिया दे रखाई ना हां रखाई ना
रही बेला है सुनहरा चुक जाई ना हां जाई ना
देरवी अपने उछार दा उधार जा करी ओ मना-

21

June
Wednesday

153.

1989

बिगड़ियो कबीरा राम दुर्दृश्य
सांचं भेष्यो अनकातहुं ना जाई

ठांगों के सांग सरिता भी बिगड़ी
सो सरिता गांगा होय निलड़ी

चन्दन के सांग तस्वर भी बिगड़ियो
सो तस्वर चन्दन होय निलड़ो

पारस के सांग लोहा भी बिगड़ियो
सो लोहा कच्चन होय निलड़ो

सन्तन के सांग कबीरा भी बिगड़े
सो कबीरा राम होय निलड़ो

153.2

वृज के नन्दलाला राप्पा के रातरियो
सभी दुख दूर हुए जब तेरा नाम लिया
— मीरा पुकारे प्रभु गिरप्पर गोपाला
बन आ गया अमृत भी तिष्ठता भरा प्याला
कौन मिटाए उसे बचाए जिसे नन्दलाला
— नैनों में श्याम बोसे मन भो बनलारी
सुप्त विसराय गई मुरली की धुन प्यारी
मन के मधुबन में रास रचाए रसिया
— जब तेरे गोकुल में आया दुख भारी
एक इशारे पर सब टिपदा तारी
मूढ़ गया गोवर्धन जहो तूजे गोड़ दिया

154.

June
Thursday

1989

22

ननवारी रे जीने का सहारा तेरा नाम देखा
मुझे दुनियों वालों से क्या काम रे

रंग में तेरे रंग गई गिरप्पर द्घोड़ दिया जग सारा
बन गई तेरे प्रेम की जोगन लेकर मन इकतारा
ओ मेरी बाँह पकड़ लो शाम रे

भूठी दुनियों भूठे बन्धन भूठी है ये माया
भूठा सांस का आना जाना भूठी है ये काया
ओ मुझे सांचा तेरा नाम रे

दर्शन तेरा जिस दिन पाँछ हर चिन्ता मिटाए
जीवन मेरा इन चरणों में आस की ज्योतजलाए
ओ मुझे प्यारा तेरा धाम रे

155

23

June
Friday

1989

ਕੁਲਗਾਨਿਆਂ ਦੀ ਨਜ਼ਰ ਸਸਤਾਨੀ ਹੋਣੀ ਏ
ਵਿਚ ਪ੍ਰਭੁ ਦੇ ਓਨਹਾ ਦੀ ਜਿਨ੍ਧਗਾਨੀ ਹੋਣੀ ਏ

ਰਹੁਂਦੇ ਸੱਸੀ ਵਿਚ ਸਸਤ ਕਾਦੀ ॥ ਬੋਲਤੇ
ਕਾਕਾ ਕਹਿਨੇ ਤੋ ਪਹਿਲੇ ਫਲਾਂ ਵਿਚ ਤੋਲਦੇ
ਕੁਲਗਾਨਿਆਂ ਦੀ ਰੇਹੋ ਨਿਸ਼ਾਨੀ ਹੋਣੀ ਏ
ਵਿਚ ਪ੍ਰਭੁ ਦੇ ਓਨਹਾ ਦੀ ਜਿਨ੍ਧਗਾਨੀ ਹੋਣੀ ਏ

ਮੁਹੱਠੀ ਯਾਂਧਾ ਕਲ ਦੇਰਵਕਾਨੀ ਮੁਲਦਾ ਨਹੀਂ
ਇਹਦਾ ਮੂਰਖਾ ਤੇ ਟਧਾਸਾ ਕਾਦੀ ਝੁਲਦਾ ਨਹੀਂ
ਕੁਲਗਾਨਿਆਂ ਦੀ ਰੇਹੋ ਕੁਵੀਨੀ ਹੋਣੀ ਏ
ਵਿਚ ਪ੍ਰਭੁ

ਰਾਗ ਦੇਖ ਕਾਲਾ ਕਾਕਾ ਮੁਰਕੋ ਕੁਡਦਾ ਨਹੀਂ
ਪਛਾਂ ਤਲਾ ਦੀ ਨਿਸ਼ਾਨੀ ਓਹੋ ਛੁਡਦਾ ਨਹੀਂ
ਕੁਲਗਾਨਿਆਂ ਦੀ ਰੇਹੋ ਨਿਗਰਾਨੀ ਹੋਣੀ ਏ
ਵਿਚ ਪ੍ਰਭੁ

ਮਹਾਵਾਕਾਗ ਤਤਕਿਸਿ ਦਾ ਉਪਦੇਸ਼ ਕਰਦੇ
ਜਾਗ ਸਤਿ ਅਸਤਿ ਦਾ ਵਿਕੇਕ ਕਾਰਦੇ
ਕੁਲਗਾਨਿਆਂ ਦੀ ਰੇਹੋ ਮੇਹਰਬਾਨੀ ਹੋਣੀ ਏ
ਵਿਚ ਪ੍ਰਭੁ

156

24

June
Saturday

1989

ਕੁਲ ਦੇ ਕ੍ਰਾਚਣ ਪਧਾਰਾ
ਮਹਾਵਾਕਾਗ ਕਹਿਤੇ ਧੇ ਸੀਠਾ
ਓਸ ਓਸ ਓਸ ਓਸ ਓਸ ਓਸ

ਗੰਭੀ ਮੈਂ ਮੀ ਜਾਨ ਚੰਚਾ
ਅਧੀ ਓਹੇਸ਼ ਕਾ ਸੁਨ੍ਹ
ਕੁਕੁਦੇਜ਼ ਮੈਂ ਉਦ੍ਧ ਲਿਏ ਆਂਕ
ਸ਼ਾਰਵ ਬਿਜਾਤੇ ਧੇ ਸੀਠਾ

ਤਪੇਥਨ ਮੈਂ ਤਪਸ਼ੀ ਭੀ
ਆਕਾਜ ਕਾਰਕੇ ਧੇ ਸਦਾ
ਹੈਵਾਜ ਹੋਤੇ ਸਭ ਕਾਨਤ ਹੈਂ
ਮਹਾਵਾਕਾਗ ਸੁਨਤੇ ਧੇ ਸੀਠਾ

ਅਧੀ ਓਹੇਸ਼ ਕੇ ਧੜ ਮੈਂ
ਸ਼ਵਾਹਾ ਕਾਨ੍ਹ ਤਨ ਮਨ ਸਾਰਾ
ਸਪਾਤਤਾ ਕੇ ਕੁਣਡ ਸੇ
ਅਸੂਤ ਨਿਕਾਲਾ ਧੇ ਸੀਠਾ

ਅਹੁੰ ਆਤਮਾ ਮਸ ਮਾਗਾ
ਨਿਸ਼ਚਾਰ ਦੁਆ ਹੈ ਦਿਲ ਅਨ੍ਧਰ
ਆਨੰਦ ਮੈਂ ਬਣਤਾ ਜਾਂਕ
ਮਹਾਤਾਕਾਗ ਕਹਿਤੇ ਧੇ ਸੀਠੀ

ਥਕਤਾ ਜਾਨੀ ਨਿਜ ਰਵੇਲ ਸੇ
ਸੂਚਿ ਸਮੇਟ੍ਟ ਅਨੱਤ ਮੈਂ
ਤੀਜ ਹੋ ਨਿਰਮਾਣ ਮੈਂ
ਮਹਾਵਾਕਾਗ ਕਹਿਤੇ ਧੇ ਸੀਠਾ

25 Sunday

26

June
Monday

157

1989

महान लाजन की सीढ़ियों गें फौर्झिरलाघु
जो चढ़ जाए सीढ़िया चौरासी लारव उसकी कोटे
मानुष तन गिला उन्मोत्ता
मैं माटी गें इस को रोला
सतगुरु जे कुपा करके
विवेक का ताला रखोत्ता
कि माटी से कांचन करे
में जब से जगत में आया

पा अपना आप भुलाया
गुरु जे मेरे मन मन्दिर गे
है शान का दीप जलाया
कि काणा से हसा करे
गुरु काम कोप से लचार
और राग देख को भगार
गे प्रेम का सागर बना कर
रनुर पिरा और सब को पिलाए
कि सबको धेम करे

मैं गुरु दे जाँड़ वारी
जाँड़ लारव २ लिहारी
स्तंष्ठ रूप का पता लाताके
गरी छुबती जैया तारी
कि आत्म रूप लरवे

गुरु आधा लज अलातार है
उसकी महिमा अपरम्पार है
कोई माने याना गाने
दो तो वो ही कृष्ण मुरार है
कि ठोपियों के आधा लड़े

158

June
Tuesday

1989

27

बसाएँ आओ प्रेम नगरिया लसाएँ
भगाएँ सब वैर को दूर गगाएँ

जात पात और ऊँच नीच को
प्रेम का रंग रगाएँ आओ प्रेम का रंग रगाएँ
हित अनहित सब मिल कर सोचे
भेद की भीत को ढाएँ आओ --

पर अवगुण और निज युण नन को
मन से शीघ्र भुलाएँ आओ --

माया के सब तार तगड़े
ब्रह्म के स्तुर से गिलाएँ आओ --

अन्तःकरण की शुहू शुभगि पर
प्रेम वज लखजा लगाएँ आओ --

शान का दीपक प्रेम की लाती
सत वृत ज्योत जलाएँ आओ --

शहन शाह और रुंसा गिल
सोया भाड़ा जगाएँ आओ --